साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

50/-

अगस्त 2026
विक्रम सम्वत् 2083

Rajluxmi Samvid Gurukulam Sainik School

Nalagarh (Himachal Pradesh) | C.B.S.E. Residential Boys School | (Class VI to XII) Science and Commerce

We bring out the winner in you

How We Stand Out ?

- Regular Sanskaram Classes
- Smart Classes and Experienced
- Teachers
- Indoor and Outdoor Games
- Shooting, Swimming, Horse Riding
- Integrated program for NDA,JEE and NEET preparation
- Communication Classes
- AC Hostels
- Pollution Free Environment
- Well Equipped Labs
- Healthy and Vegetarian Food

Contact for Admission

Bariyan, Tehsil : Nalagarh, Dist. : Solan (H.P.) 174101

Call us: 7876004251 & 7876430935, www.samvidgurukulam.com

भारत की स्वाधीनता बहुत बड़ी कीमत देकर प्राप्त की गई थी।
हजारों वीरों और वीरांगनाओं का अप्रतिम बलिदान इसकी नींव में है।
इस स्वाधीनता की रक्षा हमारा प्रथम कर्तव्य होना चाहिए।

सभी राष्ट्रभक्त बलिदानियों को कृतज्ञ नमन के साथ
भारतवासियों को स्वाधीनता दिवस की शुभकामनाएँ

साधना और सेवा का संगम

वात्सल्य निर्झर

वर्ष 23, अंक 6, अगस्त 2026

मुख्य संरक्षक

परम पूज्य महामण्डलेश्वर अनन्तश्री विभूषित
युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

संरक्षक

परम पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

प्रधान सम्पादक

संजय गुप्ता

प्रकाशक

परमशक्ति पीठ द्वारा संजय गुप्ता

सम्पादकीय मण्डल

देवेन्द्र शुक्ल एवं स्वास्तिका

प्रधान कार्यालय

वात्सल्य प्रकाशन, परमशक्ति पीठ
लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, दिल्ली –110092
दूरभाष : 011 22238751
मोबाईल सम्पर्क : 99588 85858
ई मेल : info@vatsalyagram.org
वेबसाइट : www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा–वृन्दावन मार्ग, पोस्ट–वात्सल्य ग्राम
वृन्दावन (उ.प्र.) 281003

प्रकाशक एवं सम्पादक संजय गुप्ता द्वारा
परमशक्ति पीठ के लिए
हरिओम त्यागी, ए.आर.पैकटेक प्रा.लि.,
आई–23, बेसमेंट, सेक्टर–9, नोएडा, उ.प्र. से मुद्रित एवं
परमशक्ति पीठ,
लव–103, 66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
पटपड़गंज, दिल्ली से प्रकाशित

वात्सल्य निर्झर में प्रकाशित लेख एवं रचनाएँ उनके लेखकों के विचारों की अभिव्यक्ति हैं। अतः उनसे सम्बन्धित किसी भी विवाद के लिए लेखक अथवा रचनाकार ही उत्तरदायी रहेंगे।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वं देवी जननी परा

परमशक्ति पीठ

अन्तर्यात्रा

06 धर्म और विज्ञान का समन्वय...

08 धर्मो रक्षति रक्षितः

10 राष्ट्रीय पुनरोदय – भाग 1

12 इच्छाओं के अंगार बुझाते हैं सद्गुरुदेव

14 श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव

29 धर्म संस्कृति

32 हम जो चुन लेते हैं वही...

38 आगामी कार्यक्रम

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी कृत
मानस मोती

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा॥
मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी॥

\- बालकाण्ड

इसमें रघुनाथजी का उदार नाम है, जो अत्यन्त पवित्र है, वेद-पुराणों का सार है, कल्याण का भवन है और अमंगलों को हरने वाला है, जिसे पार्वतीजी सहित भगवान शिवजी सदा जपा करते हैं।

अपनी बात...

- देवेन्द्र शुक्ल

भारत जैसे प्राचीन सभ्यता वाले राष्ट्र का निर्माण और पुनर्निर्माण युवा शक्ति के बिना अधूरा है। युवा ऊर्जा, उत्साह, नवीन विचार और बलिदान की भावना राष्ट्र को नई दिशा देते हैं। स्वतंत्रता संग्राम से लेकर आज के डिजिटल युग तक युवाओं ने भारत को आकार दिया है। लेकिन यही शक्ति जब गलत दिशा में मोड़ दी जाती है या देशद्रोही ताकतों के साथ जुड़ जाती है, तो वह विनाशकारी सिद्ध हो सकती है। आज भारत को अपनी युवा शक्ति को राष्ट्रहित से जोड़ने की आवश्यकता है।

भारत के स्वाधीनता आंदोलन में युवाओं की भूमिका केंद्रीय रही। चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु जैसे क्रांतिकारी युवा थे जिन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष किया। उनका बलिदान युवाओं में देशभक्ति की ज्वाला प्रज्वलित करने वाला था। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि युवा शक्ति कैसे सामाजिक परिवर्तन और स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करती है। स्वामी विवेकानंद ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा था -'उठो, जागो और लक्ष्य प्राप्ति तक मत रुको।' उनके विचारों ने सम्पूर्ण भारत में युवा जागरण किया और सामाजिक सुधार आंदोलनों को बल दिया।

भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में युवा शक्ति हमेशा से महत्वपूर्ण रही। आदि शंकराचार्य ने मात्र बत्तीस वर्ष की आयु में सम्पूर्ण भारत में अद्वैत मत का प्रचार किया, मठ स्थापित किए और सनातन धर्म को नई ऊर्जा दी। आधुनिक काल में स्वामी विवेकानंद ने शिकागो धर्म संसद में भारत की आध्यात्मिक गरिमा को विश्व पटल पर रखा। उन्होंने युवाओं को कर्मयोग, ज्ञानयोग और भक्तियोग से जोड़कर राष्ट्र निर्माण का मार्ग दिखाया। श्री रामकृष्ण परमहंस के शिष्य विवेकानंद ने युवा पीढ़ी को आध्यात्मिकता और राष्ट्रवाद के मेल से जोड़ा। आज भी रामकृष्ण मिशन के माध्यम से युवा अनेकों सेवा कार्यों में सक्रिय हैं।

वैज्ञानिक क्षेत्र में युवाओं का योगदान भारत को विश्व पटल पर मजबूत बनाता रहा। सर सी.वी.रमन ने 'रमन प्रभाव' की खोज की, जिसके लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला। वे युवावस्था में ही शोध में लगे थे। एस. चंद्रशेखर ने मात्र बीस वर्ष की आयु में ब्लैक होल सिद्धांत पर कार्य शुरू किया, जिसके लिए बाद में नोबेल मिला। विक्रम साराभाई ने युवा वैज्ञानिकों को प्रोत्साहित कर भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम की नींव रखी। आधुनिक भारत में ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (मिसाइल मैन) युवाओं के आदर्श बने। उन्होंने 'इसरो' और 'डी.आर.डी.ओ. जैसे अंतरिक्ष और रक्षा अनुसंधान संगठनों में युवा वैज्ञानिकों की टीमों का नेतृत्व किया और भारत को इन क्षेत्रों में अप्रतिम ऊँचाईयों पर पहुँचाया। आज क्वांटम कंप्यूटिंग, ए.आई. तथा बायोटेक जैसे अनेक क्षेत्रों में काम कर रहे युवा शोधकर्ता भारत को आत्मनिर्भर बना रहे हैं।

इतिहास साक्षी है कि देश की युवा शक्ति यदि गलत हाथों में पड़ जाए तो राष्ट्र के लिए विनाशकारी होती है। नक्सलवाद और माओवाद आंदोलनों में कई युवाओं को देशद्रोही ताकतों ने भड़काया, जिससे हिंसा और विकास बाधित हुआ। विभाजन काल (1947) में युवाओं को सांप्रदायिक उन्माद में शामिल कर लाखों जानें गईं।

आज के संदर्भ में सोशल मीडिया पर फेक न्यूज, प्रॉपगैंडा और विदेशी फंडिंग के माध्यम से युवाओं को राष्ट्र विरोधी एजेंडे में खींचा जा रहा है। कुछ छात्र आंदोलनों में राष्ट्र विरोधी नारे और अलगाववाद को बढ़ावा दिया जाता है। अभी पिछले दिनों छात्र आंदोलन के नाम पर दिल्ली सहित देश के अनेक भागों में हुआ उपद्रव इस देश के युवाओं को भड़काकर राजनैतिक उथल-पुथल का ऐसा ही नमूना था। निःसन्देह, सरकारों से अपने अधिकारों की मांग करना बुरी बात नहीं है परन्तु उसकी आड़ में अस्थिरता फैलाना बुरा है।

भारत को अपनी युवा शक्ति को सकारात्मक दिशा देने की जरूरत है। युवा शक्ति भारत का सबसे बड़ा संपत्ति है। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि 'युवा ही राष्ट्र का भविष्य हैं।' यदि हम उन्हें सही दिशा, शिक्षा, अवसर और राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा दें तो 2047 तक विकसित भारत का सपना साकार हो सकता है। लेकिन यदि हम उन्हें निराश, बेरोजगार या गलत विचारों का शिकार बनने दें तो यही शक्ति राष्ट्र को कमजोर करेगी। सरकार, समाज, शिक्षण संस्थान और परिवार को मिलकर युवाओं को 'राष्ट्र-प्रथम' की सोच से जोड़ना होगा। तभी भारत विश्व गुरु बन सकेगा।

धर्म और विज्ञान का समन्वय ही जीवन का उद्धार

- युगपुरुष स्वामी परमानन्द गिरि जी महाराज

भौतिक कमी की पूर्ति पदार्थों से ही हो सकती है। जो लोग आन्तरिक कमी की पूर्ति बाह्य पदार्थों से और बाह्य आवश्यकताओं की पूर्ति केवल आत्मस्मृति से करना चाहते हैं, वे धोखे में हैं। अध्यात्मवादी आत्मस्मृति के पथ से दुःख को दूर करते हैं किन्तु व्यावहारिक व्यवस्था का ध्यान नहीं रखते। उनके दुःखों की निवृत्ति भले ही हो जाए किन्तु जीवन से कष्ट समाप्त नहीं हो सकते। जो बाह्य पदार्थों का संग्रह करके सुखी होना चाहते हैं, वे आवश्यकताओं की आपूर्ति से पैदा होने वाले कष्टों को भले ही किसी हद तक दूर कर सकें किन्तु चिन्ता और अशान्ति से मुक्त नहीं हो सकते, दुःखों से छुटकारा नहीं पा सकते।

यह भी सम्भव हो सकता है कि पदार्थों का संग्रह करके बाहर से सुख पूर्ति की आशा से अतिभोग, अतिश्रम और अतिसंग्रह, अन्दर और भी अशान्ति व चिन्ता पैदा कर दे, जिससे शरीर ही रोगी हो जाए। इससे दुःख तो मिटेंगे नहीं बल्कि कष्ट की निवृत्ति भी असम्भव हो जाएगी अर्थात् बाहर की ओर दौड़ने वाले व्यक्ति के दुःख और कष्ट, दोनों ही मिटना असम्भव है। इसके विपरीत, जो साधक बाहर से बिल्कुल उपराम हो जाता है, व्यावहारिक व्यवस्था का बिल्कुल ध्यान नहीं रखता, उसका चित्त भी आत्मस्मृति के योग्य नहीं होता क्योंकि जब आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं होती तो वस्तु की आवश्यकता चित्त में फिरती रहती है। व्यवस्था न होने से आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं हो पाती। इससे वह इच्छा रहित भी नहीं हो पाता और न आत्मस्मृति में डूब ही पाता है। इसलिए आवश्यकताओं की पूर्ति किये बिना चित्त निःसंकल्प नहीं होता। केवल भौतिकवाद, जो कि बाह्य है और केवल अध्यात्मवाद, जो कि आन्तरिक है, दोनों एक-दूसरे को छोड़कर सफल नहीं हो सकते। अतः भौतिकवाद और अध्यात्मवाद दोनों का समन्वय आवश्यक है।

धर्म अध्यात्मवाद की ओर ले जाने में सहयोगी है और विज्ञान आवश्यकताओं की पूर्ति में। धर्म विहीन विज्ञान, केवल भोग्य पदार्थों की सृष्टि करता है और समाज को भागी बनाता है। कितना भी विकास करने पर विज्ञान मनुष्य को संतुष्ट नहीं कर पाता बल्कि महत्वाकांक्षा और पदार्थ पाने की होड़ उत्पन्न कर देता है। सामाजिक द्वेष और संघर्ष उत्पन्न होने लगता है। विज्ञान विहीन धर्म, भौतिकवाद की आलोचना करते हुए आवश्यक पदार्थों की कमी के कारण समाज को कष्ट के दलदल में गिराता है। गरीबी, भुखमरी, पदार्थाभाव, ये सब विज्ञान विरोधी धर्म की देन हैं। द्वेष, संघर्ष, लड़ाई, ईर्ष्या, जलन और भौगिक प्रवृत्तियाँ, धर्म विहीन विज्ञान की देन हैं। अतः मानव का उद्धार दोनों के समन्वय में है।

एक-दूसरे के विरोध के नमूने भारत और विदेश हैं। आजकल के साधुओं और गृहस्थों को पूर्णता की उपलब्धि नहीं हुई है। भारत, विदेश के विज्ञान का भूखा है और विदेश भारत के अध्यात्म का भूखा है। गृहस्थ भोगों से

अतृप्त है, शान्ति का भूखा है तथा सामान्य साधु-समाज, अर्थ और आश्रय का भूखा है और इसी को पाने की चिन्ता में निमग्न है। साधुओं में इन्हीं के लिए संघर्ष होते हैं। आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से चित्त अंतर्मुख और शान्त नहीं हो पाता। अशान्त और बहिर्मुख चित्त दृढ़ आत्मस्मृति को भी उपलब्ध नहीं होता। अतः पदार्थाभाव में आवश्यकताओं की पूर्ति न होने से आध्यात्मिक साधन भी असम्भव हो जाते हैं और चित्त पदार्थों की तरफ गतिमान होने लगता हैं धर्म के अभाव में चित्त, आत्मा, परमात्मा, सत्य, मुक्ति और शान्ति इनके विषय में बिल्कुल ही अपरिचित रह जाता है। इनकी खोज में धार्मिक चित्त ही प्रवृत्त होता है। जो इनकी खोज में साधनरत है, उसी को मैं 'धार्मिक चित्त' कहता हूँ।

धर्म विहीन जीवन बिल्कुल बाह्य हो जाता है। इसका उद्देश्य शरीर-रक्षा, भोग-प्राप्ति, महत्वाकांक्षा और अधिकार-रक्षा का रूप ले लेता है। वह कठिन से कठिन श्रम करके भी इन इच्छाओं की पूर्ति नहीं कर पाता क्योंकि बाह्य पहलू-बाहर की यात्रा, 'क्षितिज' को छूने जैसा प्रयास है जो सदा समीप, पृथ्वी को छूता हुआ और प्राप्य आभासित होता है किन्तु 'क्षितिज' की प्राप्ति कठिन ही नहीं असम्भव है। जैसे मृग तृष्णा का जल दिखता है पर प्राप्त नहीं होता।

धर्म और विज्ञान जब एक-दूसरे के विरोध में होते हैं तब धर्म भी अपने उद्देश्य की पूर्ति में असफल सिद्ध होता है। विज्ञान, जिसका कि उद्देश्य व्यावहारिक व्यवसाय है, वह भी असफल होता है। जीवन की पूर्णता के लिए आत्मानुभूति और शारीरिक व्यवस्था आवश्यक है। शरीर रहते, इनकी व्यवस्था का त्याग सम्भव नहीं। वर्तमान में 'शरीर या संसार नहीं है' ऐसा कोई भी दर्शन स्वीकार नहीं करता, चाहे भले ही उसे व्यावहारिक या प्रातिभासिक कहा जाए।

जिस काल में शरीर का अभाव अनुभव होता है, उस काल में शारीरिक व्यवस्था की भी आवश्यकता नहीं होती। कम-से-कम जगत की स्थिति में किसी भी पहलू से इंकार नहीं किया जा सकता। यदि हम आत्मानुभूति से वंचित रहते हैं तो मरना ही मरना शेष रह जाता है। फिर जगत में कु सार प्रतीत नहीं होता। यह जगत मृग मरीचिका, दुःख का सागर और व्याधि का मन्दिर ही दिखाई देता है। इस संसार का होना बिल्कुल व्यर्थ हो जाता है। हमारे जीवन की माँग - अमरत्व, आनन्द, शान्ति और अभय की पूर्ति की सम्भावना ही नष्ट हो जाती है। अतः आत्मबोध को त्यागकर, किसी का भी जीवन सरस, सत्य, शिव और सुन्दर नहीं हो सकता। यदि जीवन, जीवन ही न हो, जीवन ही का अभाव प्रतीत होता हो, आनन्द ही न हो तो फिर जीवन है ही क्या? यदि जीवन ही न हो, तो संसार का संग्रह किस काम का होगा? आत्मस्मृति के बिना संसार व्यर्थ सिद्ध होता है।

वर्तमान में दो विचारधाराएँ मानव के चित्त को अपनी ओर आकर्षित करती हैं - एक भौतिकवाद और दूसरी अध्यात्मवाद। कुछ लोगों का चित्त विज्ञान की ओर आकर्षित होता है और वे समझते हैं कि मानव की सम्पूर्ण समस्याओं का समाधान या माँग की पूर्ति विज्ञान ही कर सकता है। दूसरी ओर अध्यात्मवादी विज्ञान का खण्डन करते हुए, उसके दूषित पहलुओं का दर्शन कराते हुए, राष्ट्र हित के लिए अध्यात्मवाद की दुहाई देते हैं।

यही समस्या अर्जुन और भगवान कृष्ण के समय भी आई थी। अर्जुन ने भगवान कृष्ण से पूछा था कि 'कर्म और ज्ञान, इन दोनों में से एक रास्ता मेरे लिए निश्चित करके बताइए।' तब भगवान ने बताया था कि 'ये दो मार्ग नहीं हैं। जो इनको दो मार्ग कहते हैं, वो बच्चे हैं, वे नहीं जानते। कर्म-मार्ग के बिना शरीर निर्वाह भी सिद्ध नहीं हो सकता और आनन्द की सम्भावना ही समाप्त हो जाती है। अतः दोनों का सामंजस्य वर्तमान जीवन में अनिवार्य है।'

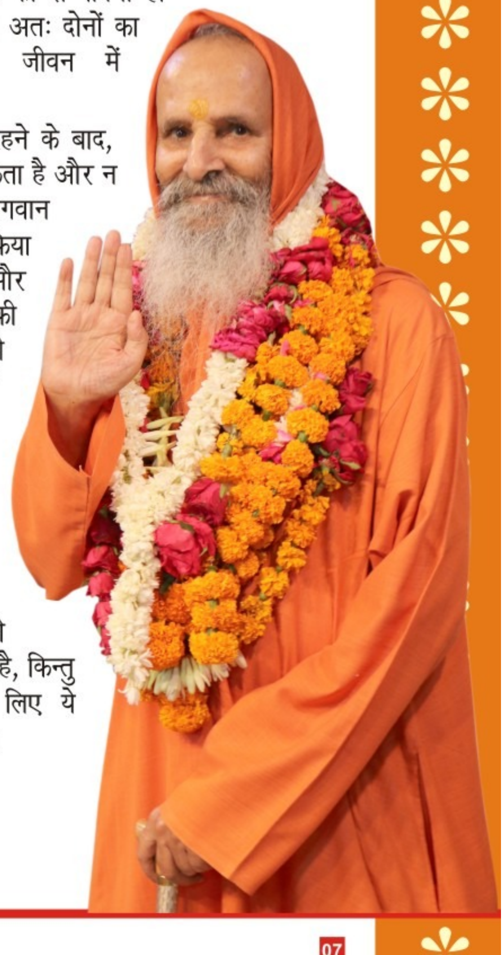

शरीर न रहने के बाद, न ज्ञान की आवश्यकता है और न कर्म की। यद्यपि, भगवान ने यह भी स्वीकार किया है कि 'मैंने ज्ञान और कर्म में दो प्रकार की निष्ठाएँ पहले कही हैं' किन्तु ये दो नहीं हैं। एक में कर्म से प्रारम्भ होकर ज्ञान में प्रवेश किया जाता है दूसरे में ज्ञान को उपलब्ध होकर कर्म को स्वीकार किया जाता है, किन्तु आत्मपरिपूर्णता के लिए ये दोनों ही अनिवार्य हैं।

धर्मो रक्षति रक्षितः

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

धर्मराज युधिष्ठिर को लेने के लिए देवतागण विमान लेकर आए। युधिष्ठिर अपने श्वान (कुत्ते) सहित विमान में प्रवेश के लिए जब अग्रसर हुए तो देवताओं ने कहा कि -'इस विमान पर केवल मनुष्य चढ़ सकते हैं, पशु नहीं।' युधिष्ठिर ने कहा कि -'यदि इस विमान पर मेरा यह साथी नहीं चढ़ सकता तो ऐसे विमान पर मैं भी आरूढ़ नहीं होना चाहता। अगर स्वर्ग में मेरे इस साथी सहित मुझे प्रवेश नहीं मिलेगा तो ऐसे स्वर्ग को मैं ठोकर मारता हूँ। मेरे भाई मेरा साथ छोड़ गए, मेरी पत्नी मेरा साथ छोड़ गई परन्तु यह मूक प्राणी प्रारंभ से जीवन की यात्रा के अंतिम समय तक मेरे साथ है। यह मूक होकर मेरा साथ नहीं छोड़ना चाहता तो भला मैं मनुष्य होकर इसका साथ कैसे छोड़ दूँ। इसका साथ निभाने के लिए मुझे स्वर्ग को भी ठोकर मारनी पड़े तो मैं तैयार हूँ।'

यह सुनकर देवतागण चकित रह गए। कुछ क्षणों के बाद उन्होंने कहा -'पीछे मुड़कर देखो धर्मराज।' धर्मराज ने पलटकर देखा। अद्भुत और अलौकिक दृश्य था! उनके श्वान में से शंख, चक्र, गदा और पद्म धारण किये हुए चतुर्भुज रूप में साक्षात् श्री नारायण प्रकट हो रहे थे। दसों दिशाएँ दिव्य आलोक से प्रकाशित हो रही थीं। धर्मराज धन्य-धन्य होकर प्रभु के चरणों में दण्डवत् हो गए। तो ऐसे धर्मज्ञ थे धर्मराज युधिष्ठिर! धर्म को धारण करने वाले धर्मराज! जिनकी धर्मपारायणता ने स्वयं प्रभु को प्रकट होने पर विवश कर दिया।

'धर्मो रक्षति रक्षितः' अर्थात् तुम धर्म की रक्षा करो, धर्म तुम्हारी रक्षा करेगा। लोग कहते हैं कि साध्वीजी जिस धर्म को रक्षा की जरूरत हो, वो धर्म भला हमारी रक्षा क्या करेगा? तो मेरा कहना है कि सर्दियों के दिनों में ऊनी कपड़े ठण्ड से आपकी रक्षा करते हैं ना? सर्दियाँ खत्म होते ही आप उन्हें ड्रायक्लीन करवाते हो फिर फिनाइल की गोलियों के साथ बक्सों या आलमारियों में जमाकर रखते हो। आठ महीने जब आप कपड़ों की रक्षा करते हो तो फिर चार महीने सर्दियों में वही गर्म कपड़े आपकी रक्षा करते हैं। हमने युद्ध के लिए अपनी सेनाएँ सीमा पर खड़ी की होती हैं। सारा भारत अपने कर से उन सैनिकों के वेतन और सुविधाओं की व्यवस्था करता है। आप सेना की रक्षा करते हो और जब दुश्मन देश हम पर आक्रमण करता है, तब सेना दुश्मनों से हमारी रक्षा करती है। हम पहले सेना का ध्यान रखते हैं फिर सेना हमारी रक्षा के लिए अपने प्राणों के उत्सर्ग के लिए भी तैयार रहती है।

इसी प्रकार से जब हम अपने धर्म की रक्षा करते हैं, तब धर्म हमारी रक्षा करता है। आप यहाँ विराजमान हैं और आपके जवान बेटा-बेटी घर में अकेले हैं परन्तु क्या आपको कोई भय है? नहीं। क्यों भय नहीं है? क्योंकि ये भारत के संविधान की दी हुई व्यवस्था नहीं है। ये सनातन धर्म और संस्कृति द्वारा दी गई व्यवस्था है कि बेटा ये तेरी बहन है और बहन के प्रति स्वप्न में भी कुविचार अपने चित्त में लाया तो फिर महापाप हो जाएगा। ऐसा पाप जिसका प्रायश्चित कभी हो नहीं सकता। किसने दी ये व्यवस्था? धर्म ने। किसने की आपकी पुत्री की रक्षा? आपके पुत्र के चित्त में जो धर्म का संस्कार है कि ये मेरी बहन है, उसने की आपकी पुत्री की रक्षा। उसने मर्यादा में बाँधा आपके पुत्र को। किसने की रक्षा? धर्म ने।

केवल हमारे देश के अंदर ही नहीं बल्कि सारे विश्व के अंदर अगर किसी ने हमें मर्यादाओं में रखा है तो धर्म ने। जब हम धर्म की मर्यादाओं का अतिक्रमण करते हैं तो फिर ये दृश्य भी देखने को मिलता है कि एक शराबी आदमी अपनी बेटी के साथ ही बलात्कार कर रहा है। एक कुकर्मी आदमी अपनी चार साल पाँच साल की बेटी को दरिंदों के हाथों में बेच देता है। ये कौन है? नास्तिक है। जो धर्म नहीं मानता, वो ये कुकृत्य करेगा और जो धर्म को मानता है, वो किसी की खोटी चवन्नी लेने में भी भयभीत होगा क्योंकि धर्म ने इन सबका निषेध किया है। क्या केवल संविधान और कानून के कारण ही

समाज व्यवस्थित चल रहा है? नहीं। धर्म की जो व्यवस्था है, उसके कारण समाज व्यवस्थित चल रहा है। अन्यथा तो कानून की जितनी दीवारें आप खड़ी करोगे, पापी और दुरात्मा लोग उसमें से अपने बचाव के उतने ही दरवाजे और खिड़कियाँ निकाल लेंगे।

एक बार ब्रिटेन में एक बार कानून बना कि कोई भी आदमी चार घोड़े की बग्घी पर सवार होकर शहर नहीं आ सकता क्योंकि शहर का ट्रैफिक जाम हो जाता है। एक जमींदार पकड़ा गया, जो चार घोड़ों की बग्घी पर सवार होकर सड़क से गुजर रहा था। जब कोर्ट में उस पर नियम उल्लंघन का मुकदमा चला तो बचाव पक्ष के वकील ने जज से कहा कि -'जज साहब! मेरे मुवक्किल की बग्घी का मौका मुआयना करवाया जाए।' जज ने कहा -'क्यों भाई! ये चार घोड़े बग्घी पर सवार होकर सड़क पर रंगे हाथों पकड़े गए हैं तो अब मौका मुआयना की कोई जरूरत नहीं है।' बहस के बाद बग्घी का मुआयना करने के लिए कोर्ट की एक टीम गई। बचाव पक्ष के वकील ने कहा कि -'ये देखिये, मेरे मुवक्किल की बग्घी पर चार घोड़े नहीं बल्कि तीन घोड़े और एक घोड़ी जुते हुए हैं। जबकि कानूनन प्रतिबंध तो चार घोड़ों की बग्घी पर है। इसलिए यह मुकदमा ही अवैध है।'

तो कहने का अर्थ है कि कानून की दीवारें जितनी मजबूत खड़ी करोगे तुम उतने ही खिड़कियाँ और दरवाजे उससे बचने के लिए निकाल लोगे। इसलिए मेरा अनुरोध है कि धर्म ने जो व्यवस्थाएँ दी हैं, उनके अनुसार चलिये। यदि आप ब्रह्मचारी हो तो किसी भी स्त्री के साथ शारीरिक संबंध नहीं बना सकते लेकिन जब तुम किसी स्त्री का साथ पाणिग्रहण करते हो तो उसके साथ शारीरिक संबंध बनाने और मानसिक संबंध जोड़ने की आज्ञा धर्म स्वयं देता है। किसी समय के लिए वही चीज 'अधर्म' है और किसी समय के लिए वही चीज 'धर्म' है। इसका विषद विवेचन धर्म के माध्यम से हमारे ऋषियों ने हम सबको दिया है।

मैं सदैव सबसे अनुरोध किया करती हूँ कि इस धर्म का रक्षण करना आपका दायित्व बनता है। धर्मो रक्षति रक्षितः। धर्म का रक्षण करो, ब्राह्मण का रक्षण करो, गौमाता का रक्षण करो, भारतीय संस्कृति और परंपराओं का रक्षण करो। मैं भारत की मातृशक्ति से भी निवेदन करती हूँ कि यदि आप चाहती हैं कि बच्चे आपकी आज्ञा का पालन करें तो बच्चों को धर्म के संस्कारों से सिंचित करो। आप स्वयं भी प्रातः जल्दी जागें और अपने बच्चों को भी जगाएँ। भारत की धरती पर रहने वालों को सुबह चार बजे जागना चाहिए क्योंकि इस समय आकाश से अमृत की वर्षा होती है। आपको जीवन मिलता है, ऊर्जा मिलती है, चेतना मिलती है चैतन्यता मिलती है। उदय होते भुवन भास्कर का दर्शन अपनी सन्तानों को कराओ ताकि वे उनके समान तेजस्विता को अर्जित कर सकें। होना यही चाहिए परन्तु होता इसके विपरीत है। तुम उन्हें सूर्यदेव का दर्शन करवाने के स्थान पर पड़ोसनों के सामने कहती हो कि -'बेटा, जरा वो ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार वाली पोएम सुनाओ आंटी को।' तुम ट्विंकल ट्विंकल लिटिल स्टार यानि छोटे-छोटे तारों की क्यों बात करती हो! यदि तुमने अपने संतानों को भुवन भास्कर का दर्शन करवाया होता तो वो भी तेज और ओज से परिपूर्ण होतीं। आज ये दृश्य दिखाई देता नहीं क्योंकि धर्म के प्रति आपकी आस्था कम हुई है। अपने बच्चों को आप जिस पाश्चात्य सभ्यता के रंग में रंग रहे हो, उसका दुष्परिणाम हमारे सामने है। यदि तुम कभी कहोगी ना कि -'बेटा तेरे लिए बड़े कष्ट सहे, नौ महीने पेट में रखा, तो वो अपनी जेब से नोटों की गड्डी निकाल के मुँह पर फेंकेगा कि लो किराया मम्मी नौ महीने का, परन्तु अब मुझे आगे से ऋणी मत कहना।' जो तुम्हारे प्रति कृतज्ञता व्यक्त नहीं कर सका, वो अपनी मातृभूमि के लिए भला कैसे कृतज्ञता व्यक्त कर पाएगा! ये संस्कार किसने देना है? आपने देना है धर्म का संस्कार। माता-पिता के प्रति सम्मान की भावना, मस्तक को चरणों पर रखकर आशीर्वाद लेने की हमारी परंपरा है। जब प्रणामों की भूमि पर हम मेहनत करते हैं तब आशीर्वादों की फसल पैदा होती है।

बच्चा बेचारा नहीं जानता और उसके बर्थडे पर तुमने उससे केक कटवाया। साल भर का है वह बेचारा और छुरी पकड़कर केक काटता है। कोई बात नहीं। अभी केक काटना सिखा रही हो। थोड़ा बड़ा होगा तो तुम्हारी जेब काटेगा और जब तुम विरोध करोगे तो तुम्हारा गला काटेगा। वो काटना सीख रहा है, तुम उसे काटना सिखा रहे हो। मोमबत्तियाँ बुझा कर तालियाँ बजाते हो! अरे वाह! 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का मंत्र उच्चारण करने वाले भारतीयों की संतानें, कुल के दीपक मोमबत्ती बुझाते हैं और माता-पिता बेशर्मी से ताली बजाते हैं! ये है हैप्पी बर्थडे? अंधकार ही करेगा वो। बुझे दीयों को जलाने की बात छोड़ो, जले दीयों को वो बुझाएगा। ये संस्कार आपने दिया पाश्चात्य और आधुनिकता के नाम पर। अरे भैया, विदेशियों के यहाँ मोमबत्तियाँ बुझाना शगुन होता होगा किंतु हमारे यहाँ दीपक को बुझाना अपशगुन माना जाता है। याद रखना कि हम दीये जलाने वाले हैं, बुझाने वाले नहीं। प्रकाश फैलाने वाले हैं हम, अंधकार पैदा करने वाले नहीं।

तो धर्म का संस्कार अपनी संतानों को दीजिए। तुलसी के पौधे जैसे अपने बच्चों को कुसंस्कारों की शराब से नहीं बल्कि संस्कारों के गंगाजल से सींचो। तुम मेहनत करोगे और उनको संस्कारी बनाओगे तो निश्चित रूप से वृद्धावस्था में तुमको संतोष होगा कि मैंने अपने बच्चों को कितना सुंदर संस्कार देकर मनुष्य बनाया, राष्ट्रभक्त बनाया, भगवान का भक्त बनाया। संकल्प करो कि तुम उनको धर्म का संस्कार दोगे, राष्ट्र धर्म का संस्कार दोगे।

तुम ऐसा कर सको इसके लिए धर्म का रक्षण करो तभी धर्म आपकी रक्षा करेगा। इन व्यवस्थाओं को बनाकर रखो क्योंकि ये बड़ी पवित्र व्यवस्थाएँ हैं। इनको मेरे पुरखों ने अपना खून देकर सींचा है, तुम आधुनिकता के नाम पर इनको नष्ट मत करो। यदि भारत की धरती को स्वर्ग की तरह देखना चाहते हो तो ये छोटे-बड़ों के बीच में प्यार और सम्मान का जो संबंध है, दायित्व और कर्तव्यों की जो बात है, उसको हम अच्छी तरह निभाएँ। यही मेरी आप सबसे आशा है

राष्ट्रीय पुनरोदय

(पहला भाग)

– भानुप्रताप शुक्ल

(यह लेख फरवरी, 1993 में लिखा गया है)

भारत ढोंगी धर्मनिरपेक्षता और अल्पसंख्यकवाद का ही नहीं, भारतवासियों की सद्गुण विकृति का भी संताप और संत्रास भोग रहा है। केवल दलीय हिताहित, केवल निजी छवि, केवल सत्ता-राजनीति, केवल पाखण्ड, केवल प्रवंचना और केवल सामाजिक ही नहीं, अपितु वैचारिक छुआछूत असाध्य रोग से पीड़ित है। अपनी-अपनी प्रतिष्ठा, अपनी-अपनी घोषणाओं और अपनी बाजी जीतने की चिन्ता ने आक्रामक महामारी की तरह सबको अपने पेट में ले रखा है। व्यक्तिगत हित सामाजिक और सामूहिक हितों पर भारी पड़ रहा है।

यह स्थिति पहली बार उत्पन्न नहीं हुई है। गत पाँच हजार वर्षों से भी अधिक समय से निजी प्रतिष्ठा और सद्गुण-विकृति के अनेक प्रसंग और प्रमाण उपलब्ध हैं। देश की आजादी की लड़ाई के समय और आजादी के बाद भी अनेक ऐसी घटनाएँ घटी हैं कि जिनके कारण आजादी के आन्दोलन में अवरोध आया, आन्तरिक संकट बढ़ा, सीमा पर युद्ध हुए, कांग्रेस कई बार टूटी, दूसरे दल भी बिखरे, विसर्जित हुए नए-नए दल बने, एक नेता ने दूसरे नेता को पार्टी से निकाल देने के लिए गुटबाजी की। पार्टी छोड़ दी। यह सब केवल सिद्धान्तों के प्रति निष्ठा-अनिष्ठा या साधनों के उपयोग और मतभेद के कारण ही नहीं, अपनी-अपनी महत्ता, अपने-अपने स्थान और पद को बनाए रखने के लिए भी किया गया। गांधी-तिलक, गांधी-अरविन्द, गांधी-सुभाषचन्द्र बोस, नेहरू-पटेल, नेहरू-पुरुषोत्तमदास टंडन, नेहरू-राज गोपालाचारी, इंदिरा-सिन्डीकेट, इंदिरा-मोरारजी देसाई, इंदिरा-जगजीवनराम, जगजीवनराम-चरण सिंह और आज तक के अनेक ऐसे जीवन्त उदाहरण हैं जिनका विवरण देने की आवश्यकता नहीं है, केवल उल्लेख मात्र ही पर्याप्त है।

किन्तु 6 दिसम्बर के अयोध्या कांड के बाद अपने देश के विशिष्टजनों का जो चरित्र उजागर हुआ है, उसने सद्गुण-विकृति का अत्यन्त घिनौना उदाहरण प्रस्तुत किया है। हिन्दुओं ही के सद्गुणों के कोड़े से हिन्दुओं को ही पीट-पीटकर किसी को उदार, किसी को क्षमा, दया, करुणा का सागर और किसी को सहिष्णु तो किसी को, कट्टरपंथी, उग्रवादी और आतंकवादी बताया जा रहा है।

अयोध्या में जड़ता और अपमान के प्रतीक जर्जर ढाँचे को चिढ़े हुए रामभक्तों और उत्तेजित कारसेवकों ने अपने बाहुबल से ध्वस्त कर दिया तो सारा भारत ही नहीं, समस्त संसार भी काँप उठा था। सबसे अधिक काँपा और सिहरा वह हिन्दू समाज, जो सैकड़ों वर्षों से अपमान, पराजय और दासता का बोझ ढोते ढोते थक गया था और इस प्रयास में था कि वह उस बोझ को उतार फेंके या कोई उस बोझ से उसे मुक्त करे। फिर भी ढाँचा ध्वस्त हो गया तो वह काँप उठा।

इस कांड के बाद कोई दुखी हुआ, किसी को वह दुर्भाग्यपूर्ण लगा, किसी ने इसे सेकुलरिज्म की हत्या कहा, किसी ने इसे हिन्दू समाज को हजारों वर्षों से चली आ रही उदारता और सहिष्णुता का ध्वंस माना। किसी ने कहा कि यह इस देश में रह रहे अल्पसंख्यकों अर्थात् मुसलमानों का कत्लेआम करके उन्हें देश की सीमा से बाहर भगा देने या उन्हें हिन्दू समाज में शामिल हो जाने के लिए विवश करने का आतंकपूर्ण संकेत हैं।

अपने विरुद्ध इस पाखण्डपूर्ण और घृणित अभियान के कारण हिन्दू समाज में कुछ समय के लिए अपराध बोध जगा। लेकिन जैसे-जैसे तथाकथित सद्भावनावादियों के चरित्र और उनकी साजिशों का पता लगता गया, जैसे-जैसे छद्म बुद्धिजीवियों और सत्तालोभी राजनेताओं का ढोंगी सेकुलरिज्म और कपटी साम्प्रदायिक सद्भावना उजागर होती गई, उसका सन्नाटा टूटने लगा, उसकी स्तब्धता समाप्त हुई, उसका भौचक्कापन भंग हुआ कि डाकुओं, हिंसकों, हत्यारों और आक्रमणकारियों के पक्षधर उन्हें उदारता और सहिष्णुता का

उपदेश देकर उनमें आत्महीनता उत्पन्न कर रहे हैं, कि अपमान सहन करते रहना ही सद्भावना का मूल आधार है, आत्म सम्मान की आकांक्षा अल्पसंख्यक अर्थात् मुस्लिम विरोधी है और राष्ट्रीय एकता की दुश्मन है। हिन्दुओं की एकपक्षीय उदारता तथा एकाकी सहिष्णुता को सामाजिक और साम्प्रदायिक सद्भावना एवं समन्वय के प्रथम शर्त के रूप में निरूपित किया जाने लगा तो इस हादसे के कारण हतप्रभ हिन्दुओं का होश वापस लौटा। उसकी शर्मिन्दगी समाप्त हुई। वह स्वाभिमान के सर्वमान्य मार्ग के बीचों-बीच आकर खड़ा हो गया। उसने अपनी सद्गुण-विकृति को पहचाना।

अयोध्या कांड भारत के हजारों वर्ष के इतिहास, चरित्र और चिन्तन का मंथन कर रहा है। यह पुराणकालीन उस सागर-मंथन के समान है जिसमें से अमृत भी निकला था और विष भी। धनवन्तरि भी प्रगट हुए थे और विश्वकर्मा भी। 6 दिसम्बर उस महाभारत काल की पुनरावृत्ति है जब पाण्डव और कौरव पक्ष के सभी योद्धा अपनी-अपनी प्रतिज्ञा और प्रतिष्ठा के प्रति प्रतिबद्ध थे, जब निजता सामाजिकता को निगल रही थी, जब धर्म-अधर्म और नीति-अनीति का कोई अर्थ नहीं रह गया था। तब धर्मराज को भी अपनी माँ और बंधुओं के साथ दंश भुगतना पड़ा था। उन्हें लाक्षागृह में जलाने का षड्यंत्र रचा गया, जब धर्मराज अज्ञातवास में थे तो पितामह भीष्म के संरक्षण में हस्तिनापुर के सिंहासन पर अधर्म आसीन था। कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध आरम्भ होने के पूर्व परमात्मा योगेश्वर श्रीकृष्ण ने भरसक कोशिशें कीं कि युद्ध न हो, मामला सुलझ जाए, फिर भी काम न बना। कारण, वही अधर्मी निजता और अपने-अपने व्यक्तित्व और प्रण का अहंकार।

महाभारत काल में कृष्ण का प्रवेश निजता के गलियारे में सामूहिकता और सामाजिकता का प्रवेश था। वह काल ऐसा था कि जब निज की प्रतिज्ञा का मूल्य इतना अधिक था कि समाज-राष्ट्र और धर्म से जुड़े समस्त जीवन मूल्य बेमानी हो गए थे। सद्गुण-विकृति प्रबल थी कि सर्वहितकारी प्रवृत्तियाँ अन्तर्ध्यान हो गई थीं। इस सद्गुण-विकृति से यदि कोई अछूता था तो वह थे श्रीकृष्ण ।

किस-किस की बात करें। भीष्म अपना विवाह न करने और हस्तिनापुर के सिंहासन की रक्षा करने की प्रतिज्ञा से बंधे थे तो कर्ण अपनी दानशूरता और प्रतिशोध की कामना से। द्रोणाचार्य ही उनके लिए सर्वस्व था, तो कृपाचार्य कौरवों की परम्परागत यजमानी त्यागने के लिए तैयार न थे। धर्मराज युधिष्ठिर को अपनी सत्यवादिता प्रिय थी, तो अर्जुन अपने गाण्डीव का अपमान करने वालों का शिरोच्छेदन कर देने की प्रतिज्ञा के प्रति प्रतिबद्ध थे। प्रतिज्ञा कृष्ण ने भी की थी कि कुरुक्षेत्र के रण में वे निहत्थे रहेंगे, न शस्त्र धारण करेंगे और न लड़ेंगे। महाभारत के युद्ध के पूर्व और युद्ध के समय भी सभी की इच्छा थी कि धृतराष्ट्र के अंधे और दुर्योधन के अधर्मी दुःशासन का अंत हो, सभी चाहते थे कि धर्म की विजय हो और पाण्डवों को उनका अधिकार मिले। सभी, जी हाँ, सभी की यह निरपवाद इच्छा थी कि दुर्योधन पराजित हों, धर्मराज विजयी हों और इस सभी में पितामह भीष्म भी थे, गुरु द्रोणाचार्य भी, माता गांधारी भी थीं और दानवीर योद्धा कर्ण भी। फिर भी वे सभी कौरवों की ओर से कमान सम्हाले हुए थे। कौरव पक्ष बहुत ही प्रबल और बहुत ही बड़ा था। वहाँ धर्म-अधर्म,

न्याय-अन्याय के ज्ञाता और व्याख्याताओं की कमी नहीं थी। विदुर जैसे नीतिज्ञ और भीष्म जैसे धर्मज्ञ अभी तक भारत की धरती पर जन्मे नहीं हैं और श्रीकृष्ण जैसा सर्वमान्य व्यक्ति शायद ही अब कभी जन्मे। किन्तु महाभारत में हुआ क्या ? कहने के लिए तो वह युद्ध अधर्म के नाश और धर्म की स्थापना के लिए लड़ा गया था। परन्तु दोनों पक्षों ने अधर्म किया कौरवों ने सामूहिक रूप से एकत्र होकर अभिमन्यु की हत्या करके अधर्म किया, तो अर्जुन ने शस्त्रहीन जयद्रथ और कर्ण को मार कर। गुरु द्रोणाचार्य ने कौरवों के पक्ष में लड़कर अधर्म किया तो धर्मराज ने 'नरो वा कुज्जरो वा' का असत्य भाषण करके अधर्म किया। कृष्ण के शस्त्र न धारण करने की अपनी प्रतिज्ञा तोड़कर रथ चक्र से भीष्म पर प्रहार करने के लिए दौड़कर अधर्म किया, तो बलराम ने अधर्म की आग में देश को जलता छोड़कर तीर्थाटन पर जाकर अधर्म किया।

शेष भाग अगले अंक में...

('भानुप्रताप शुक्ल समग्र', खण्ड 13 से साभार)

गुरु पूर्णिमा विशेष

इच्छाओं के अंगार बुझाते हैं सद्‌गुरुदेव

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

गुरु पूर्णिमा के इस पावन उत्सव में आप सबको बहुत-बहुत आशीर्वाद और शुभकामनाएँ। गुरु पूर्णिमा का उत्सव एक तरह से कृतज्ञता का उत्सव होता है। जिनसे हम पाते हैं, उनके प्रति हमारे हृदय में कृतज्ञता का भाव आता है। और ये जो कृतज्ञता है ये मनुष्य होने का बहुत सुंदर लक्षण है।

क्या छोटी-छोटी बातों को लेकर भी क्या कभी आपके मन में कृतज्ञता का भाव आता है? जब हम अपने स्नानागार में स्नान करते हैं, तब ठंडे पानी की जलधार हमारे शरीर की गर्मी के ताप का हरण करती है। तो मन में विचार आना चाहिए कि कितने लोगों के श्रम ने इस जल को मेरे वॉशरूम तक पहुँचाया है। उसमें बहुत सारे श्रमिकों का श्रम लगा है। बहुत सारे मजदूरों ने अपना पसीना बहाया है। मीलों-मीलों दूर लंबी पाइप लाईनों को डाला है जिनके माध्यम से गंगा, यमुना या नर्मदा जी का जल हमारे घरों तक पहुँचता है। जब स्नान करते समय उनका स्मरण होता है, तब आपके हृदय में कृतज्ञता का भाव जाग्रत होता है। जहाँ कृतज्ञता होती है, वहाँ शिकायत नहीं आती।

मात्र जल के ही लिए नहीं, जिस भोजन ने हमको तृप्त किया, हमारे शरीर का पोषण किया, वो भोजन भी यूँ ही हमारी थाली में नहीं आ गया। उस अनाज को रोटी के रूप में परिवर्तित कर देने वाले सैकड़ों लोगों का उसमें श्रम लगा है। इसलिए आपको ख्याल आता होगा जब आप थाली के सामने हाथ जोड़कर माता अन्नपूर्णा का स्मरण करते हैं। धरती का स्मरण करते हैं, किसान का स्मरण करते हैं। ऐसे ही भोजन पाना प्रारंभ नहीं करते। पहले आप आपके हृदय में प्रार्थना का जन्म होगा। वो एक तरह की कृतज्ञता है।

माँ-पिता के प्रति कृतज्ञ होना चाहिए क्योंकि उनका प्रसाद हम सबका ये शरीर है। उन्होंने हमें ये शरीर दिया है। जन्मदाता है वो हमारे। जननी है वो, जनक है हमारे। वो हमारे शरीर में विद्यमान हैं। भले ही स्वर्गवास हो गया हो उनका। उनका लोक परलोक गमन हो गया हो। किंतु वो हमारे शरीर में जीवित हैं। और कदाचित् वो हमारी आदतों में भी हैं, हमारे संस्कारों में भी हैं। क्योंकि कोख से लेकर, गोद से लेकर उनके आंगन में खेलने से लेकर, शिक्षा दीक्षा से लेकर हमने जो देखा उनको करते हुए वो हमारे संस्कार में है, वो हमारी आदत में है। उन आदतों ने हमारे चरित्र का निर्माण किया। जब ये स्मरण आएगा आपको तो आपके हृदय में उनके प्रति प्रेम से भीगी हुई श्रद्धा का जन्म होगा, आदर का जन्म होगा।

जैसे आप प्रातः जागकर भूमि पर अपना पैर रखने से पहले धरती माता को प्रणाम करते हो। कहते हो कि हे माँ मुझे क्षमा करना। मैं आपके ऊपर अपने पैर रखते की धृष्टता कर रहा हूँ। अब आप सोचो आपकी प्रातः कितनी सुंदर हो जाती है जब आपके हृदय में ये भाव आता है और सारा दिन आप कैसे खिले रहते हो। क्यों? क्योंकि एक सुंदर तत्व आ गया आपके भावों में, आपकी भावनाओं में एक शुचिता आ गई है, शुभता आ गई है, कृतज्ञता आ गई है, अर्पण की भावना आ गई है। आप विचार करो कि जिन माँ-पिता ने हमें जन्म दिया है, शरीर दिया है उनके प्रति हमें हृदय में आदर होता है। लेकिन जिस सद्‌गुरुदेव ने जन्म-मरण के चक्कर से मुक्त होने का मार्ग बताया है क्या वो जाग्रत ईश्वर नहीं? गुरुदेव क्या देंगे आपको? आपको दृष्टिकोण देंगे। दृष्टि देंगे, सोचने का तरीका देंगे, समझने की समझ देंगे। हम गुरु के पास क्यों जाते हैं? हम इसलिए जाते हैं कि हमने संसार की सारी उपलब्धियाँ पाई हैं, बहुत कुछ प्राप्त किया लेकिन उसके बाद भी नहीं लगता कि हम तृप्त हो गए। हमें लगता है कि और बहुत कुछ चाहिए। जब ऐसा सब होगा, तब हम बड़े सुखी होंगे। तो गुरुदेव इस भ्रांति को दूर करते हैं। क्योंकि भ्रांति बहुत बड़ी बाधा है। भ्रांति वो बेड़ी है जो व्यक्ति के पैरों में जब पड़ जाती है तो उसकी गति अवरुद्ध हो जाती है। तो सद्‌गुरु क्या है?

बंधन छेदा। उनका एक नाम है बंधन का छेदन करने वाले, बंधनों को काट देने वाले। क्योंकि बंधनों में बंधा हुआ व्यक्ति कभी भी परम स्वातंत्र्य का अनुभव नहीं कर सकता। बंधनों में बंधी हुई नाव, तटों में बंधी हुई नाव मंजिलों को कभी पाती नहीं है। इसीलिए नाव चलाने का श्रम करने से पहले नाव को तटों से मुक्त करना जरूरी है। अब प्रश्न ये होता है कि बहुत सारे बंधन दिखाई देते हैं। आपको नाव की रस्सी दिखाई देती है, आपको पशुओं के गले में पड़ी जंजीरें दिखाई देती हैं जो खूंटियों से बंधे हैं। किसी पंछी को पिंजरे में कैद कर लिया उसका पिंजरा दिखाई देता है लेकिन मनुष्य को अपना पिंजरा, अपनी रस्सी, अपना बंधन, अपनी जंजीरें दिखाई कदाचित् वो दिखाई दें तो फिर उनपर हथौड़ा चले। क्योंकि वो बंधन स्थूल नहीं है, वो सूक्ष्म है। उन सूक्ष्म बेड़ियों से जकड़े हुए हम कभी स्वतंत्रता, कभी अंतरिक्ष की उड़ान का अनुभव ना कर पाएंगे। क्या है वो?

तो हमारे धर्मग्रंथों ने कहा कि वो निरंकुश इच्छाओं की जंजीरें हैं, जिसने आपके पैरों को बांधा है। निरंकुश इच्छाएँ। तो निरंकुश इच्छाओं का मतलब है कि उनका कहीं कोई कोई फुल स्टॉप है ही नहीं कि इसके बाद ये, इसके बाद ये, इसके बाद ये, इसके बाद। बहुत बार आपके मन में आएगा कि अगर हमारे हृदय में इच्छा ही नहीं होगी तो हम पुरुषार्थ कैसे करेंगे, मेहनत कैसे करेंगे? इच्छाओं की वजह से ही तो हम परिश्रम करते हैं, मेहनत करते हैं। लेकिन उस इच्छा की पूर्ति के बाद ये क्या गारंटी है कि कोई दूसरी इच्छा नहीं पैदा होगी?

सौ वर्ष की उम्र जीने के बाद भी ययाति को लगता था

कि मेरा तो अभी कुछ भी नहीं बना। मेरी तो सारी योजनाएँ धरी रह गईं। मुझे तो अभी और जीना है। यम देवता ने कहा कि तुम अपने पुत्रों से पूछो, यदि वो तुम्हें अपनी आयु दे दें। तो उनके अनेकों पुत्रों में से एक तैयार हुआ। उसने कहा कि पिताजी मेरी उम्र ले लीजिए आप। क्योंकि यदि सौ वर्षों तक जीकर भी आपका अभी सबकुछ अधूरा ही है तो फिर मैं इतना जीकर क्या करूंगा क्योंकि परिणाम तो यही आएगा मेरे जीवन में भी। तो आप ले लीजिए मेरी आयु। तो कथा कहती है कि जाने कितनी बार वह व्यक्ति सौ-सौ वर्षों तक उसने दूसरों से उम्र ले-लेकर जिया लेकिन अंततोगत्वा वो कभी ना कह सका कि मैं पूर्ण हो गया, मैं तृप्त हो गया। तो ये क्या है? ये ययाति नहीं, ये हमारा मन है जो कभी तृप्त नहीं होता।

एक व्यक्ति ने कहा कि गुरुदेव, कृपया मुझे बताईये कि इच्छाओं की पूर्ति कैसे हो सकती है। गुरुदेव ने कहा मेरी एक शर्त है कि जब तक मैं कुएँ से पानी ना भर लूँ, तब तक ना तो तू मुझसे कोई बात मत करना और ना ही बीच में टोकना। वो व्यक्ति बोला कि गुरुदेव मैं ये क्यों करूंगा? आप पानी भरो आराम से। अब कुएँ में पानी भरने के लिए जैसे ही उस महात्मा ने बाल्टी उठाई और इस व्यक्ति के हृदय में तो प्रश्न पैदा हो गया। अब दिल कर रहा है कि मैं बोलूँ। उन्होंने बाल्टी भीतर डाली, बाहर निकाली, भीतर डाली, बाहर निकाली, भीतर डाली और बार-बार ये कर रहे हैं लेकिन पानी बाल्टी में भर नहीं रहा। अब ये कब तक ऐसे करते रहेंगे? क्योंकि उस बाल्टी में पेंदा ही नहीं था। वो बार-बार भीतर डाल रहे हैं, खाली बाल्टी बाहर आ रही है, वो फिर डाल रहे हैं, खाली बाल्टी बाहर आ रही है। अब इससे रुका नहीं गया। ये बोला कि ये क्या है? ऐसा कभी होता है कि बिना पेंदी की बाल्टी में पानी भर जाए? रुकिए जरा, ये क्या कर रहे हो आप?

उसके ऐसा कहते ही महात्मा बोले कि तेरे मेरे बीच का अनुबंध समाप्त। मैंने कहा था कि तू बीच में बोलना मत, तू बीच में बोल गया। तेरा सवाल था कि इच्छाओं की पूर्ति कैसे हो सकती है? मैंने तेरे प्रश्न का उत्तर दिया। क्योंकि वो बिना पेंदी की बाल्टी है। सारा संसार भी उसमें भर लोगे तो वो खाली की खाली रहेगी। इसलिए उनकी पूर्ति में लगना है या फिर इस विषय को समझना है।

आप ये देखिए कि आपकी शरीर की जरूरतें आपको आपसे करा लेती हैं। आप जितने भी मर्जी त्यागी बन जाओ आप कह दो मुझे भोजन नहीं करना तो फल खाओगे। आप कह दो मुझे फल भी नहीं खाने तो पत्ते खाओगे। आप कह दो कि मैं पत्ते भी नहीं खाऊंगा तो जल पियोगे। भूख आपसे भोजन का पुरुषार्थ करवा ही लेगी। जो शरीर की जरूरतें हैं वो आपको संचालित करेंगी। आप उन शरीर की जरूरतों को पूरा करने के लिए परिश्रम करते हो, जो पूरी होती हैं। लेकिन मन की इच्छाओं पर कभी फुल स्टॉप नहीं लगता। ये मन कोल्हू के बैल जैसा है जिसको बस घूमते ही रहना है। उसकी कोई मंजिल नहीं है, उसका कोई पड़ाव नहीं है। तो संतों ने कहा कि अगर सद्‌गुरुदेव को कुछ देना है तो क्या दोगे? आप गुरु को माला दोगे, पुष्प दोगे, क्या दोगे गुरु को? लेकिन देने के लिए कुछ अगर है हमारे पास तो वो एक ही चीज है। अपने मन को गुरुदेव के चरणों में समर्पित करना चाहिए और मन से मुक्त हो जाना चाहिए। संतों ने कहा हम उन संतन के दास जिन्होंने मन मार लिया। लेकिन मन मरता नहीं है। शरीर मरता है, जगत मरता है, दृष्टिगोचर सारी वस्तुएँ मर जाती हैं परन्तु मन नहीं मरता। बार-बार शरीर मरा पर मन नहीं मरा। दोबारा शरीर धारण करके मन की ही ये सारी योजना है। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, सूक्ष्म शरीर, कारण शरीर। ये मन क्या है? मन है इच्छा। इच्छा क्या है? बीज। अगर बीज को धरती में डालोगे तो वर्षा होगी और ये अंकुरित हो जाएगा। इसको कोई रोक नहीं सकता। लेकिन जो बीज भुन जाता है उसे हजार बार धरती पे बो, वो कभी उग नहीं सकता।

तो गुरु क्या करते हैं? आपके मन में इच्छा के बीज को दग्ध कर देते हैं, भून देते हैं। अगर आप धान बोओगे तो उग जाएंगे वो। लेकिन धान का छिलका अलग कर दो, चावल अलग कर दो। अब आप छिलका बोओ या चावल बोओ, ये उगने वाला नहीं है। जब तक वो जुड़े हैं तभी तक उनमें उर्वर शक्ति है, उगने की सामर्थ्य है। तो ये इच्छा का बीज दग्ध हो जाए इसका इसका मंत्र क्या है? आप कहते हो ना कि हमें मंत्र चाहिए। जो लोग अशांत होते हैं ना उन्हें ज्यादा मंत्र के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। कई बार पागलपन आ जाता है। मैंने बहुत सारे धार्मिकों को सरके हुए देखा है। अंदर तो अशांति भरी है। आप एक यांत्रिक व्यवस्था में राम-राम-राम-राम या राधे-राधे-राधे-राधे जप रहे हो और भीतर तूफ़ान मचा है, भीतर बवाल है। उसके साथ साक्षात्कार करना पड़ेगा आपको। मन की इस पूरी व्यवस्था के जटिल जाल को जब तक आप नहीं समझेंगे तब तक मंत्र भी कल्याण नहीं करेगा। मंत्र क्या? जो मन की सत्ता को समाप्त कर दे वो मंत्र होता है। और मन क्या?

जो विचारों की श्रृंखला है उसको कैंची से काट दिया जाए। विचारों की अनंत श्रृंखला। आपके भीतर विचारों के तूफ़ान हैं। उसमें भ्रांतियां हैं, वहम हैं, निरंकुशता है। आपको उपलब्धियों की दृष्टि नहीं दे पाता ये मन। जो नहीं प्राप्त है उसके लिए आप पागल हैं, व्याकुल हैं। तो संत को क्या देना चाहिए? वासना से भरा मन, भ्रांति और दंभ से भरा मन, अभिमान अहंकार से भरा मन ऐसा देना चाहिए क्या गुरुदेव को? गुरुदेव को तो शुद्ध चीज देनी चाहिए, स्वच्छ चीज देनी चाहिए, पवित्र चीज देनी चाहिए। भगवान रामचरितमानस में कहते हैं, निर्मल मन जन सो मोहि भावा, मोहि कपट छल छिद्र न भावा। निर्मल जन जिसका निर्मल मन है, वो जन मुझे पाता है, वो मुझे भाता भी है, वो मुझे पाता भी है। तो इस गुरु पूर्णिमा पर आप अपने गुरुदेव को अपना निर्मल मन अर्पित करें। यही उनके चरणों में सच्ची भेंट होगी। आप उन्हें अपना निर्मल मन भेंट कीजिए, वो अपनी कृपा से आपके भीतर सुलग रही इच्छाओं के अंगारे बुझा देंगे।

श्री गुरु पूर्णिमा महोत्सव में भावविभोर हुआ वात्सल्य ग्राम

हे गुरुदेव! आप ब्रह्मा हैं, विष्णु हैं, महेश हैं। आप ही वह सूर्य हैं जो ज्ञान के अंधकार को मिटाते हैं। जब जीवन की राह भटक जाती है, जब मन में संशय के बादल छा जाते हैं, तब आपकी एक कृपा दृष्टि सब कुछ बदल देती है।

आपकी वाणी में अमृत है, आपकी दृष्टि में करुणा है और आपके हृदय में शिष्यों के लिए अनंत प्रेम है। आप बिना कुछ माँगे सब कुछ दे देते हैं। हम शब्दों में आपकी महिमा नहीं गा सकते, क्योंकि आप शब्दों से परे हैं। गुरु पूर्णिमा के इस पावन अवसर पर हम आपको कोटिशः प्रणाम निवेदित करते हैं। आपने हमें अक्षरों से परे, शास्त्रों से आगे और स्वयं से भी ऊपर उठना सिखाया। आपकी शिक्षाएँ न सिर्फ बुद्धि को जगाती हैं, बल्कि हृदय को भी शुद्ध करती हैं।

गुरु पूर्णिमा के पूर्ण चन्द्र से आलोकित रात्रि को चन्द्र दर्शन करते हुए हमें अनुभव होता है कि आपका आशीर्वाद भी चंद्रमा की तरह शीतल और पूर्ण है।

आज गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर हम सब आपके चरणों में अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, अपने कोटि-कोटि प्रणाम समर्पित करते हैं कि आपके पावन सानिध्य ने हमारा जीवन धन्य कर दिया।

अपनी सद्गुरुदेव वात्सल्यमूर्ति पद्म भूषण विभूषिता पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के प्रति अनन्य निष्ठा और श्रद्धा से पगे इन भावों के साथ उनके शिष्य-शिष्याओं ने वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल सभागार में गुरु पूर्णिमा का पावन पर्व 28 एवं 29 जुलाई मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन एवं दीदी माँ जी द्वारा अपने पूज्य गुरुदेव श्री युगपुरुष जी महाराज की चरण पादुकाओं के पूजन-अर्चन के साथ हुआ। इस अवसर पर देशभर से आए उनके शिष्यगणों ने उनका पाद पूजन करते हुए अपनी श्रद्धा को उनके पावन श्रीचरणों में समर्पित किया। संविद स्कूल की छात्राओं ने अपनी सांस्कृतिक प्रस्तुतियों में गुरु महिमा का दर्शन कराया। शिष्यगणों एवं गणमान्यजनों ने पूज्या दीदी माँ जी के दर्शन एवं प्रवचनों का लाभ लिया।

वात्सल्य ग्राम में गुरु पूर्णिमा महोत्सव की झलकियाँ

‘शक्ति एंड सृष्टि’ राष्ट्रीय संगोष्ठी, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़

नारी की सृजनकारी शक्ति

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

मैं मंच पर विराजमान आदरणीय प्रोफेसर रेनू जी को और आदरणीय शांता अक्का जी की उपस्थिति को वंदन करती हूँ। आप सब मातृशक्ति को प्रणाम करती हूँ। अभी आदरणीय अक्का ताई के संबोधन ने हम सबको मार्गदर्शित किया कि हमारी दिशा क्या है, हमारे लिए करणीय क्या है, हमारी संभावनाएँ क्या हैं और क्या है जो हम कर सकते हैं। ताई के प्रेरणादायी उद्‌बोधन से हम सब प्रेरित होकर एक नई ऊर्जा का अनुभव कर रहे हैं।

अपनी शक्ति को पहचानना सबसे बड़ा कार्य होता है। जब कभी स्वयं की शक्ति का बोध नहीं होता तो किसी दूसरे को उसके बारे में सचेत करना पड़ता है। हर व्यक्ति को एक सचेतक की जरूरत होती है। बहुत बार ऐसा होता है कि दीपक भी है, बाती भी है, तेल भी है परन्तु छोटी सी एक चिंगारी के अभाव के कारण उन सबका होना सार्थक नहीं हो पाता। ऐसे ही किसी की प्रेरणा पाकर नन्ही सी चिंगारी बनती है और हमारा अंतर्मन ओज से, तेज से, प्रकाश से और ज्योति से आलोकित हो जाता है। हम अपने को पहचानते हैं, अपनी संभावनाओं को सम्पन्न करते हैं और फिर हम स्वयं चलता फिरता एक तीर्थ हो जाते हैं।

निष्कामता हमें तीर्थत्व देती है परन्तु जब सकाम भाव आता है तो वो वैसा ही होता है जैसे आसमान से उतरी हुई बूंद मिट्टी में मिलकर विलुप्त हो जाती है। सकाम के आते ही हम हानि-लाभ के तराजू पर अपने कार्यों को तौलने लग जाते हैं। मुझे क्या मिला? मुझे क्या मिलना चाहिए था? मेरी पात्रता तो बड़ी थी परन्तु मेरी उपलब्धि उतनी नहीं है। यह विचार हमारी ऊर्जा को सोख लेता है। इसके विपरीत जब हम निष्काम होते हैं तब हमारा मन अपना बहुत कुछ दूसरों के लिए दे देने को करता है। यह बड़ा ही उदात्त भाव है।

यह उदात्त भाव विशेष रूप से स्त्री को ‘नारायणी’ बनाता है। इस भाव के वशीभूत उसकी आंतरिक और आध्यात्मिक शक्ति जो हमेशा ही उसके भीतर बीज के रूप में विद्यमान रहती है, वो अंकुरित होती है। वो प्रस्फुटित होकर वृक्ष बनती है और उस पर आनंद के फूल लगते हैं। तृप्ति और मुक्ति के फल लगते हैं। प्रत्येक व्यक्ति अपने आपके बारे में सोच रहा है। वो सोच सकता है कि मैं कहाँ खड़ा हूँ, लाभ-हानि के तराजू पर स्वयं के श्रम को तौलकर तृप्त हो रहा हूँ या निष्काम होकर आनंद की लहरियों में निमग्न हूँ। तराजू कोई दूसरा नहीं, आकलन कोई और नहीं कर सकता, प्रमाण पत्र कहीं से मिल नहीं सकता, मान्यताएँ दी नहीं जा सकती। इस उदात्त चित्तवृत्ति को हम स्वयं अनुभव कर सकते हैं। अपने आप पर रीझ सकते हैं और अपने आप पर रीझना यानि मुझे लगता है कि इससे बड़ा कोई उत्सव दूसरा हो नहीं सकता। ना रूप पर रीझा जा सकता है क्योंकि वो क्षणिक है और ना पदों पर रीझा जा सकता है क्योंकि वो अस्थाई हैं। ना ही धन पर रीझा जा सकता है क्योंकि वो बाहर की दरिद्रता भले ही छीन ले, परन्तु आंतरिक दरिद्रता तो बरकरार रहती ही है।

तो फिर किस पर गौरव किया जा सकता है? किसका आनंद लूटा जा सकता है? आनन्द है बाँटने में। सृष्टि चारों ओर से दे रही है, मनुष्य तो केवल बटोर रहा है। धरती ने नदियों को दिया, नदियों ने सागर को दिया, सागर ने बादलों को दिया और बादलों ने पुनः धरती को दे दिया, फिर धरा ने पुनः नदियों को समर्पित कर दिया। सृष्टि में चारों ओर केवल देने की ही प्रक्रिया चल रही है। केवल एक मनुष्य ही है जो बटोरने में लगा है। हम अनुभव कर रहे हैं कि जो बटोरा जाता है वो ‘विषाद’ और जो बाँटा जाता है वो ‘प्रसाद’ होता है। बाँटना भी कैसा? सम्पूर्ण निष्कामता के साथ।

भारत की स्त्री को इसके लिए किसी शिक्षा की जरूरत ही नहीं होती क्योंकि पूरे वातावरण में और प्रकृति ने जिस तरह हमें बनाया है, जिस तरह हमें गढ़ा है, वो किसी महान उद्देश्य की पूर्ति के लिए। बहुत बार हमें लगता है कि हममें बड़ा धैर्य है लेकिन ये तो परमात्मा ने दिया है, प्रकृति ने दिया है। एक रात्रि भी अगर नन्हें नवजात के पास पिता को सोना पड़ जाए तो वो परेशान हो जाएगा परन्तु उसी स्थान पर एक माँ स्वयं गीले में सोकर भी सन्तान को सूखे में सुलाती है। ये उसकी अपनी योग्यता नहीं है। उसे तो ये गुण प्रकृति ने दिया है, प्रभु ने दिया है, परमात्मा ने दिया है।

अगर पुरुष गणित के केंद्र पर है तो स्त्री काव्य के केंद्र पर है और उसके पीछे परमात्मा का एक परम उद्देश्य है। आप जानते हैं कि गुलाब का फूल जब चमेली का होने का प्रयत्न करता है तो ना गुलाब का रह पाता है ना चमेली का हो पाता है। दुविधा में दोनों गए, माया मिली ना राम। जब एक स्त्री अपने स्त्रीत्व में, अपने मातृत्व में, अपनी पूर्णता में उतरती है तो फिर वो खिलती है, मुरझाती नहीं। इसलिए वो नैसर्गिक गुण जो प्रकृति ने हमको दिए, वो अद्‌भुत हैं।

स्मरण रखियेगा कि स्त्री होना कोई बड़ी बात नहीं है लेकिन मनुष्य को मनुष्यत्व से देवत्व की ओर अग्रसर करने की कला भारत की स्त्री जानती है। इसीलिए यदि वो राक्षस के घर में भी है, यदि वो दैत्य की पत्नी भी है तो भी वो उस दैत्य के घर में भक्तराज प्रहलाद को उतार लाती है। अगर वो चाहे तो राक्षसों के घर में भी देवताओं को जन्म दे देती है। उसके पास सामर्थ्य है। एक स्त्री जब भय से आँखें बंद करती है तो अंधे पुत्र की माँ बनती है। एक स्त्री जब भय से पीली पड़ती है

तो पांडु रोग से ग्रसित पुत्र की माँ बनती है। वहीं दूसरी ओर जब एक स्त्री जब श्रद्धा से व्यासजी के व्यक्तित्व की महिमा को समझते हुए उनके अंश को कोख में धारण करती है, तो साक्षात धर्मस्वरूप विदुर जी महाराज का प्रादुर्भाव होता है।

राजस्थान चले जाइए तो वहाँ मेवाड़ की देवियों के जौहर स्थल की माटी को अपने माथे पर लगाकर जगत सोचता है कि हम धन्य हो गए क्योंकि वो भस्म साधारण माटी नहीं होती। अपने शील की रक्षा के लिए अग्नि के कुंडों में उतरकर अग्नि स्नान करने वाली राजपूतानियों के शौर्य और बलिदान की सुगंधि है उस माटी में। विचार कीजिए, यदि उनको अपना जीवन समाप्त करना ही था तो अग्नि स्नान क्यों किया उन्होंने? वो विषपान करके भी तो विधर्मियों से अपनी लाज बचा सकती थीं परन्तु वो जानती थीं कि जिन पापियों ने हमें घेर रखा है, वो दुष्ट नर पिशाच स्त्रियों की लाशों से भी बलात्कार करते हैं। उन देवियों ने संकल्प किया कि पापियों के हाथों में हमारे मृत शरीर भी नहीं पड़ने चाहिए। इसीलिए उन्होंने अग्नि में स्नान करके अपने शरीरों का दाह किया, अपने स्वाभिमान, अपने शील की रक्षा के लिए। कितना अद्‌भुत उदाहरण हैं हमारे सामने!

भारत की नारियों के शौर्य, पराक्रम और बलिदान की ये अंतहीन कथाएँ हैं। लेकिन आज हमारे सामने बड़ी विडंबनाओं से भरी हुई चुनौतियाँ हैं। वो स्त्री की प्रामाणिकता के ऊपर भारी संकट खड़ा कर रही हैं। हम जो दिशा देख रहे हैं वो बिलकुल भी सही नहीं है। अपने पिता की स्वाभाविक वो नौकरी जो माता को मिल रही है वो मुझे मिल जाए, इसके लिए अपनी माँ की हत्या करने वाली क्या भारत की बेटी हो सकती है? अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने होने वाले पति की हत्या करने वाली क्या भारत की बेटी हो सकती है? भारी क्षोभ होता है, इन सब घटनाओं के बारे में सुनकर।

दशकों पूर्व बात चली कि स्त्री को स्वतंत्र होना चाहिए, उसको उसके अधिकार मिलने चाहिए। स्वतंत्रता तक तो बात ठीक थी परन्तु स्वतंत्रता के नाम पर उच्छृंखलता! क्या ये कुछ ज्यादा नहीं है?

ये तो मैंने सोचा था कि घूंघट के पट खोल के मैं भी
दो आँखों से जग को देखूँ
किंतु आवरण हटे हैं जितने वो मुझको स्वीकार नहीं हैं
सदियों से मैं चीख रही हूँ,
गौतम ऋषि का श्राप गलत था
धोबी का आक्षेप गलत था
मतिअंधों की द्यूत सभा में
धर्म धुरंधर भीष्म पितामह सबका वह वैवश्य गलत था
किंतु बरसाती नाले सी उच्छृंखल
अपने राघव लवकुश तजकर
स्वर्णमयी लंका को वरतीं
तुम मेरी प्रतिमान नहीं हो
तुम मेरी प्रतिहारी नहीं हो
कोई और नाम तुम खोजो
तुम भारत की नारी नहीं हो।

भारत की नारी होने के जो मायने हैं, उनसे हमारा वांगमय और इतिहास भरा पड़ा है। भारत की धरती को सुखी रखना आपके हाथ में है देवियों। पुरुष के हाथ में भी है लेकिन पूरा नहीं है। कदाचित्, यह ईश्वर के हाथ में भी नहीं है क्योंकि ईश्वर ने अपनी महान कृति बनाई मानवी। उससे कहा गया कि तुम केवल मानव ही नहीं गढ़ोगी बल्कि तुम ईश्वर भी गढ़ोगी। तुम शूरों को और वीरों को गढ़ोगी। तुम प्रामाणिकता को गढ़ोगी। तुम विश्वास को गढ़ोगी। तुम करुणा की बयार बहाओगी। तुम विश्वास की बुनियाद को सुदृढ़ करोगी। तुम अर्पण और समर्पण के काव्य रचोगी। क्योंकि तुम रचनाधर्मी हो और मेरी सर्वश्रेष्ठ कृति हो। पिता से पहले माता आएगी। लेकिन उस मातृत्व को प्रमाणित करोगी तुम।

इतना बड़ा उत्तरदायित्व है आज मातृशक्ति के ऊपर। इसलिए आज जहाँ कहीं भी भ्रष्टाचार, दुराचार, अनाचार, अत्याचार दिखाई देता है, जहाँ कहीं भी लोग विभिन्न प्रकार के दुर्व्यसनों में डूबे दिखाई देते हैं तो लगता है कि इनकी माँ ने इनके लालन-पालन में सही भूमिका नहीं निभाई। जी भरकर अपने स्तनों का दूध अपनी संतानों को पिलाया हो तो इसके होंठ किसी सिगरेट से तृप्ति ना तलाशते। जी भरकर उसे अपना प्यार दिया होता तो वो पैसा इकट्ठा करके अपने उस रिक्तता को पूरा करने का प्रयत्न कदापि ना करता। स्वाभिमान शून्य संतानों को देखती हूँ तो लगता है जरूर इसकी माँ को भी स्वाभिमान नहीं होगा। अगर बच्चा निंदा के माहौल में पलता है तो उसे बस दोष ही दिखाई देते हैं। यदि उसी जगह कोई बच्चा कृतज्ञता के माहौल में पलता है तो वो सबके प्रति धन्यवाद से भरा होता है। घर के अन्दर एक सुन्दर वातावरण का निर्माण माँ ही करती है। आप सृजनकर्ता ही नहीं, निर्मात्री ही नहीं, आप बनाने वाली, जीवन देने वाली ही नहीं, जन्म देने वाली ही नहीं, जीवन देने वाली देवियों, अपने स्वरूप को, अपने भावों को और अपने उच्छृंखल विचारों को अगर संयत कर लोगी तो बड़ा उत्कर्ष होगा भारत भूमि का।

जो नदी मर्यादा के तटों को तोड़ देती है वो किसी ना किसी गाँव में बाढ़ बनकर घुस जाती है और उस पूरे गाँव के सृजन को गारा बना देती है और स्वयं उसका जल भी गारा बन जाता है। इसीलिए मर्यादा के तटों में बहती हुई जीवन धारा अपने लक्ष्यों को पाती है। धर्मग्रंथों के द्वारा दी गई मर्यादा का हम अनुपालन और अनुसरण करें। अनुशासित होने को शासित होना ना मानें और स्वतंत्रता को तथाकथित उच्छृंखलता ना बनाएँ तो भविष्य अच्छा होगा, जीवन प्रामाणिक होगा, घर में सुख शांति होगी और वातावरण सुंदर होगा।

शक्ति एंड सृष्टि राष्ट्रीय संगोष्ठी

मातृशक्ति परिवार एवं समाज की नींव हैं

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

चंडीगढ़

पंजाब विश्वविद्यालय (पी.यू.) चंडीगढ़ ने विकसित भारत-2047 पहल के अन्तर्गत चंडीगढ़ प्रशासन के सामाजिक कल्याण, महिला एवं बाल विकास विभाग के सहयोग से विगत 20 जुलाई को 'शक्ति एवं सृष्टि' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया। आयोजन की मुख्य वक्ता रहीं पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी।

आयोजन का उद्देश्य महिलाओं के राष्ट्र निर्माण, समावेशी समाज और सतत विकास में योगदान को सम्मानित करना और उनकी भूमिका पर व्यापक चर्चा करना था। यह संगोष्ठी चंडीगढ़ के सेक्टर-25 स्थित टैगोर थियेटर और पंजाब विश्वविद्यालय के न्यू कन्वेंशन सेंटर में आयोजित की गई, जिसमें शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, विद्यार्थियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और नागरिक समाज के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

मुख्य वक्ता के रूप में पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतंभरा जी ने महिलाओं की राष्ट्र, समाज और संस्कार निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि -'ईश्वर ने महिलाओं को करुणा, संवेदनशीलता और सृजन की अद्वितीय शक्ति प्रदान की है, जो परिवार और समाज की मजबूत नींव है।

राष्ट्र सेविका समिति की प्रमुख संचालिका सुश्री शांता अक्का ताई ने अपने संबोधन में कहा कि -'महिलाओं की आंतरिक शक्ति, त्याग और समाज को स्थिर एवं सशक्त बनाए रखने में उनका योगदान अद्भुत है। महिलाओं की भूमिका केवल परिवार तक सीमित नहीं बल्कि राष्ट्र के भविष्य के निर्माण में भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पंजाब विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. रेणु विग ने कहा कि आज महिलाएं शिक्षा, विज्ञान, प्रशासन, उद्योग, सामाजिक सेवा और नेतृत्व सहित हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रही हैं तथा विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने में उनकी भूमिका निर्णायक होगी। इस अवसर पर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान देने वाली महिला विभूतियों और गणमान्य व्यक्तियों को विशेष सम्मान से नवाजा गया। कार्यक्रम की शुरुआत वन्दे मातरम्, गणेश वंदना तथा महिला सशक्तिकरण पर आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के साथ हुई। इसके अलावा अहिल्याबाई होल्कर के जीवन और उनके प्रशासनिक योगदान पर आधारित विशेष लाइट एंड साउंड शो आकर्षण का केंद्र रहा।

पंजाब विश्वविद्यालय की ओर से पूज्या दीदी माँ जी का स्वागत-वन्दन

वात्सल्य गंगा आश्रय, हरिद्वार

शिव परिवार प्राणप्रतिष्ठा समारोह

हरिद्वार

विगत 7 से 9 जुलाई तक वात्सल्य गंगा आश्रय, कनखल हरिद्वार के मंदिर परिसर में श्री शिव परिवार प्राणप्रतिष्ठा समारोह का दिव्य आयोजन पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर मुख्य यजमान रहे परमशक्ति पीठ के अनन्य सहयोगी एवं नागपुर निवासी श्री दयाल मूलचंदानी एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती कविता मूलचंदानी। उल्लेखनीय है कि 'वात्सल्य गंगा आश्रय' परमशक्ति पीठ का हरिद्वार स्थित प्रकल्प है। माँ गंगा के पावन तट पर निर्मित यह स्थान अत्यन्त ही रमणीय है।

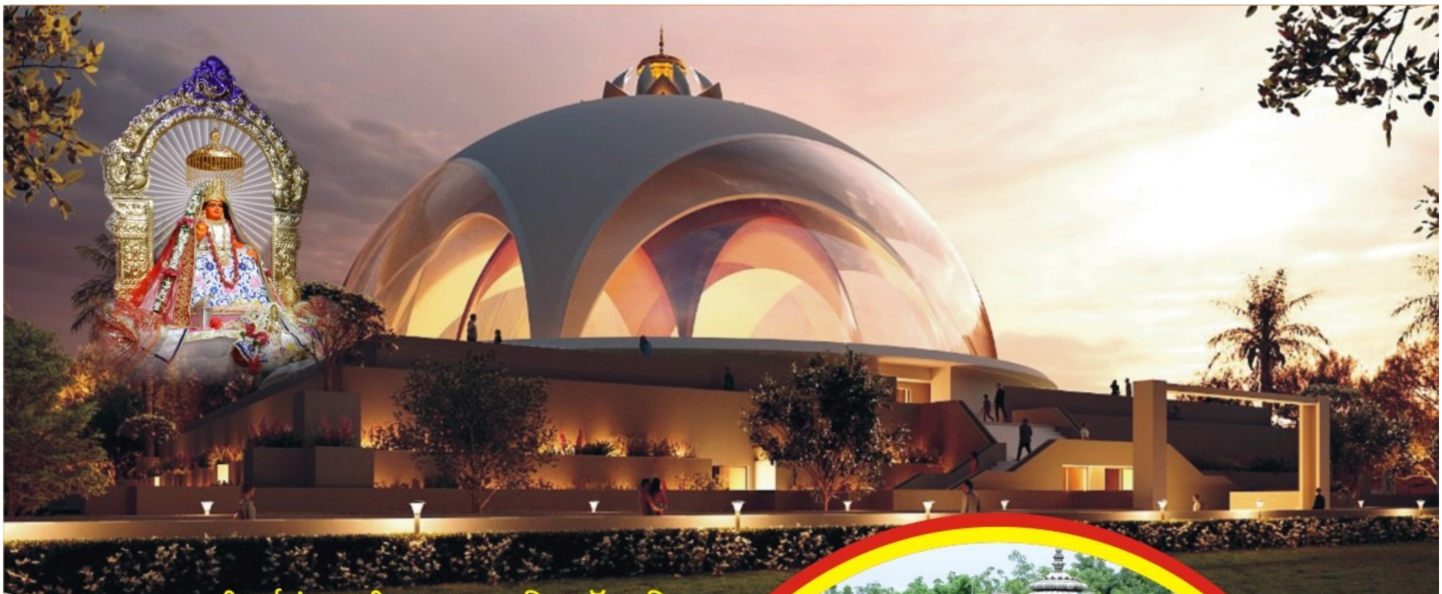

श्री सर्वमंगला पीठम् का प्रस्तावित मॉडल चित्र

वात्सल्य ग्राम वृन्दावन में निर्माणाधीन

श्री सर्वमंगला पीठम्

विशेषताएँ :

- लगभग डेढ़ लाख वर्गफीट क्षेत्रफल में विस्तारित एवं एक सौ चौदह फीट की ऊँचाई लिए हुए श्री सर्वमंगला पीठम् शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय होगा।
- रज, तम और सत्व गुणों को प्रदर्शित करती इसकी तीन पारदर्शी छतें मध्य से बिना किसी सहारे के निर्मित होंगी।
- इन विशाल छतों के ठीक नीचे माँ सर्वमंगला अपने सृजनात्मक, कल्याणक, वात्सल्यमयी तथा माधुर्य रुप में विराजेंगी।
- पीठम् की तल मंजिल पर एक अत्याधुनिक प्रदर्शनी होगी, जिसके माध्यम से सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग में भारतीय नारी की भूमिका के सुनहरे अध्यायों को दर्शाया जाएगा। प्रथम मंजिल पर माँ सर्वमंगला माता के चारों ओर चलित परिक्रमा पथ होगा।
- मन्दिर के चारों ओर स्टेडियमनुमा सीढ़ियों का निर्माण किया जा रहा है, जहाँ बैठकर श्रद्धालुगण माता का मनोहारी दर्शन कर सकेंगे। मन्दिर भवन के चारों ओर नयनाभिराम बाग–बगीचे भी होंगे, जिनमें बैठकर श्रद्धालुओं को अनुपम शान्ति का अनुभव होगा।

श्री सर्वमंगला पीठम् के निर्माण में

एक ईंट हेतु मात्र 1100/– का सहयोग समर्पित कर पुण्य लाभ प्राप्त करें।

आप अपनी सहयोग राशि का चेक अथवा डिमाण्ड ड्राफ्ट 'परमशक्ति पीठ' के नाम से सम्पूर्ण भारत में किसी भी शाखा से जमा करवा सकते हैं।

5,00,000/- (पाँच लाख रुपयों) की सहयोग राशि समर्पित कर 'माँ सर्वमंगला न्यास' के न्यासी बनने हेतु सम्पर्क करें – 011-22238751, 22238757

बैंक का नाम : यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
खाते का नाम : परमशक्ति पीठ
खाता संख्या : 520101244630425
IFS Code : UBIN0905321
MICR : 110026344
शाखा : सी–50, प्रीत विहार, दिल्ली

कन्यादान

आह्वान

सौभाग्यशाली होते हैं वो वर और वधु जो सन्त शक्तियों के आशीर्वादों की छत्रछाया में दाम्पत्य जीवन की डोर से बँधते हैं। परमपिता परमेश्वर की इसी असीम अनुकम्पा की पात्र बन रही हैं, वात्सल्य परिवार की बेटियाँ। उनको आध्यात्मिक शक्तियों के सानिध्य में समाज के प्रतिष्ठित परिवारों की बहू बनते देखना अतीव आनन्द के क्षण होते हैं। परमशक्ति पीठ के माध्यम से हम उनके घर बसाने की पुण्य कार्य में संलग्न हैं। आप भी इस कार्य में उनके कन्यादान के सहभागी बनकर सामाजिक योगदान प्रदान कर सकते हैं।

(सहयोग हेतु सम्पर्क करें)

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज,
नई दिल्ली –110092
दूरभाष : 9999971714, 9999971716

आप अपना सहयोग सीधे बैंक में भी जमा करा सकते हैं, खाते की विस्तृत जानकारी निम्नानुसार है :

A/c Name	: Param Shakti Peeth A/c Kanyadan
A/c No.	: 6023000100098186
IFSC Code	: PUNB0602300
Branch Name	: Mandawali, Delhi

आर्थराइटिस से बचने के व्यायाम और आहार

आर्थराइटिस को मैनेज करने में एक्सरसाइज की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण है। इससे न केवल दर्द कम होता है बल्कि जोड़ों की फंक्शनिंग भी बेहतर होती है। यह मांसपेशियों को मजबूत बनाती है और जोड़ों को लचीला बनाए रखने में मदद करती है।

नियमित शारीरिक गतिविधि जोड़ों के आसपास की मांसपेशियों को मजबूत करती है। सूजन घटाती है। नियमित वॉक, साइकिलिंग जैसी गतिविधियाँ जोड़ों की ओवरऑल हेल्थ के लिए बेहद जरूरी हैं। इस संबंध में चार ऐसी एक्सरसाइज हैं जो आर्थराइटिस के कारण होने वाली सूजन और दर्द को मैनेज करने में बेहद कारगर हैं। ये एक्सरसाइज जोड़ों को मजबूत और लचीला बनाती हैं।

घुटने से तौलिए को दबाना

यह एक्सरसाइज घुटने पर बिना अधिक जोर दिए जांघ के ऊपरी हिस्से में पाई जाने वाली मांसपेशियों को मजबूत बनाती है। जोड़ों को मजबूत करती है। घुटने के दर्द को कम करने के लिए यह एक सरल, लेकिन प्रभावी एक्सरसाइज है। इसके लिए पैरों को सीधा कर पीठ के बल लेट जाएँ। अब रोल किया हुआ तौलिया एक घुटने के नीचे रखें। इसके बाद एड़ी को ऊपर उठाते हुए घुटने से तौलिए को नीचे की ओर दबाएँ। 5 सेकंड के लिए होल्ड करें, फिर पैर को ढीला छोड़ दें। दोनों पैरों से इसे 10-15 बार दोहराएँ।

पीछे की ओर चलना

पीछे की ओर चलने से जोड़ों पर दबाव कम पड़ता है। शरीर के निचले हिस्से को मजबूती मिलती है। पीछे की ओर चलना संतुलन सुधारने और घुटनों के आसपास की मांसपेशियों को मजबूत करने के लिए एक अच्छी एक्सरसाइज है। इसके लिए किसी समतल, खुले स्थान को चुनें। धीरे-धीरे पीछे की ओर चलना शुरू करें, कदम नियंत्रित और स्थिर हों। जैसे-जैसे चलने में अभ्यस्त होते जाएँ, गति बढ़ाते जाएँ। इसे रोजाना 5 से 10 मिनट करें।

पैर उठाने वाला अभ्यास

यह एक्सरसाइज घुटनों और कूल्हों के आसपास की मांसपेशियों को मजबूत करती है। जोड़ों की मजबूती सुधारती है। दर्द कम करती है। इसे कहीं पर भी किया जा सकता है। इसके लिए पीठ के बल लेट जाएँ। अब एक पैर मोड़ लें। दूसरे पैर को सीधा रखें। अब धीरे से सीधे पैर को मुड़े हुए घुटने की ऊँचाई तक उठाएँ, कुछ सेकंड के लिए होल्ड करें और फिर इसे वापस नीचे लाएँ। दोनों पैरों से इसे 10-15 बार दोहराएँ।

पिंडली को मजबूती देने वाली स्टैंडिंग टिबिया रेजेज

यह एक्सरसाइज पैरों के निचले हिस्से में ताकत बढ़ाती है। लचीलेपन में सुधार करती है। विशेष रूप से पिंडली के आसपास की मांसपेशियों को मजबूत करती है, जो घुटने और टखने के मूवमेंट को बेहतर रखने में मदद करते हैं। इससे दर्द घटता है। जोड़ मजबूत रहते हैं। इसके लिए पैरों को कूल्हों की चौड़ाई के बराबर फैलाकर खड़े हो जाएँ। धीरे से पंजों को ऊपर की ओर उठाएँ। एड़ियों को जमीन पर ही रखें। कुछ सेकंड के लिए होल्ड करें। और फिर पूर्व स्थिति में आएं। इसे 10-15 बार दोहराएँ।

आर्थराइटिस से बचने के आहार

आर्थराइटिस को मैनेज करने के लिए दवाईयों, फिजिकल थैरेपी के साथ ही जीवनशैली व डाइट में बदलाव जरूरी हैं। आर्थराइटिस में ऐसे मदद करते हैं ये फूड :

ऑलिव ऑइल : इसमें ओलियो कैथल नामक यौगिक पाया जाता है। इसमें इबुप्रोफेन के समान एंटी-इंफ्लेमेटरी गुण होते हैं। कुकिंग के लिए इसका उपयोग कम या मध्यम आँच में करें। इसमें पाया जाने वाला एंटीऑक्सीडेंट जोड़ों को नुकसान से बचाता है।

ओमेगा-3 : यह शरीर में इंफ्लेमेटरी प्रोटीन की मात्रा घटाता है। इससे जोड़ों के दर्द और जकड़न से राहत मिलती है। अखरोट, अलसी और चिया के बीज इसके प्रमुख स्रोत हैं।

पत्तेदार हरी सब्जियाँ और बेरीज : पालक तथा सरसों का साग जैसी पत्तेदार सब्जियों में भरपूर एंटीऑक्सीडेंट्स, विटामिन्स, मिनरल्स और विटामिन ई होते हैं, जो जोड़ों के लिए लाभदायक हैं। बेरीज जैसे जामुन, स्ट्रॉबेरी, ब्लूबेरी व शहतूत में एंथोयानिन द्रव्य होता है, जो सूजन घटाता है।

हल्दी : हल्दी में करक्यूमिन नामक शक्तिशाली एंटी-इंफ्लेमेटरी यौगिक होता है, जो आर्थराइटिस के कारण होने वाली सूजन और दर्द को कम करता है। इसे आहार में शामिल करने या हल्दी की चाय पीने से लाभ मिलता है। इसके सप्लीमेंट भी उपलब्ध हैं।

अदरक : अदरक एक और शक्तिशाली एंटी-इंफ्लेमेटरी फूड है, जो गठिया के लक्षणों को कम करता है। इसमें जिंजरोल्स और सोग ओल्स जैसे यौगिक होते हैं, जो इंफ्लेमेशन के कारणों को कम करते हैं। अदरक का नियमित सेवन जोड़ों के दर्द व सूजन को कम करने में मदद करता है।

(www.bhaskar.com से साभार)

एस.पी.पी.सी. पतंजलि वेलनेस सेन्टर, वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

चिकित्सा एवं व्यवस्था शुल्क (प्रति व्यक्ति प्रतिदिन)

डीलक्स रुम (1+1) – **रुम चार्जेस 3500/-**
+ ट्रीटमेंट और मेडिकेटेड डाइट चार्जेस 2000/-(एक व्यक्ति हेतु)
+ एक समय की डॉक्टर्स कन्सल्टिंग फीस 300/-

डीलक्स रुम (शेयरिंग) – **रुम चार्जेस 2000/-**
+ ट्रीटमेंट और मेडिकेटेड डाइट चार्जेस 4000/-(एक व्यक्ति हेतु)
+ एक समय की डॉक्टर्स कन्सल्टिंग फीस 300/-

फैमेली सुईट (3+1) – **रुम चार्जेस 5500/-**
+ ट्रीटमेंट और मेडिकेटेड डाइट चार्जेस 8000/-(एक व्यक्ति हेतु)
+ एक समय की डॉक्टर्स कन्सल्टिंग फीस 300/-

प्रीमियम सुईट (1+1) – **रुम चार्जेस 5000/-**
+ ट्रीटमेंट और मेडिकेटेड डाइट चार्जेस 5000/-(एक व्यक्ति हेतु)
+ एक समय की डॉक्टर्स कन्सल्टिंग फीस 300/-

- उपरोक्त शुल्क में नेचुरोपैथी एवं आयुर्वेदिक ट्रीटमेंट, योगा, यज्ञ चिकित्सा, डाइट, एक्यूप्रेशर, फिजियोथैरेपी और रूम फैसीलिटी सम्मिलित हैं।
- ब्लड टेस्ट, कोलोन हाइड्रोथैरेपी, एक्यूपंक्चर, लीचथैरेपी और श्रृंगी थैरेपी का शुल्क अलग रहेगा।
- अटेंडेंट चार्ज 1500/- प्रतिदिन रहेगा जिसमें उनका भोजन एवं योगा सेशन सम्मिलित है।

स्वामी परमानन्द प्राकृतिक चिकित्सालय
योग एवं अनुसंधान केन्द्र

आयुर्वेद एवं प्राकृतिक चिकित्सा, श्रृंग चिकित्सा, पंचकर्म, योग क्लास, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंक्चर तथा फिजियोथैरेपी की सुविधा आवासीय व्यवस्था के साथ उपलब्ध है

मोटापा, डायबिटीज, हाई ब्लड प्रेशर, थॉयराइड, सर्वाइकल स्पॉन्डिलोसिस, जोड़ों का दर्द, त्वचा रोग आदि असाध्य बीमारियों का निदान किया जाता है।

आई.पी.डी. की व्यवस्था भी उपलब्ध है
ओ.पी.डी. प्रातः 9 से सायं 5 बजे तक

एस.पी.पी.सी. पतंजलि वेलनेस सेंटर

वात्सल्य ग्राम, मथुरा-वृन्दावन रोड, वृन्दावन (उ.प्र.)

बुकिंग संबंधी सम्पर्क नंबर : 98370 82341
ईमेल : info.sppc@vatsalyagram.org

वात्सल्य प्रकाशन *की प्रस्तुतियाँ...*

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन विचारों से युक्त साहित्य परमशक्ति पीठ के 'वात्सल्य प्रकाशन' द्वारा प्रकाशित किया जाता है, जो आपको जीवन की अनेक समस्याओं के सरल समाधान देता है। आप भी इन पुस्तकों को पढ़कर अपना जीवन सकारात्मक रूप में परिवर्तित कर सकते हैं।

वात्सल्य साहित्य

01. आत्मसुख की ओर
02. सद्गुरु - बन्धनों के मुक्तिदाता
03. योग - सफल जीवन का रहस्य
04. सार्थक जीवन के सूत्र
05. यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
06. जीवन का परमानन्द
07. साधना के पथ पर
08. जागो भारत की नारी
09. सद्गुरु - जीवन की आवश्यकता
10. माँ - सृष्टि की धुरी
11. मुझे बचाओ माँ
12. परमशक्ति योग (हिन्दी)
13. परमशक्ति योग (अंग्रेजी)
14. यशोदा भाव - वात्सल्य ग्राम की मूल प्रेरणा
15. अनुभूति
16. पाथेय
17. व्यक्तित्व और विचार
18. मेरी स्मृतियों के भानु भैया
19. शुभाशीष
20. युगपुरुष की युगयात्रा
21. पिबत भागवतं रसमालयम्
22. नया सवेरा लाओ (काव्य संग्रह)
23. साधना के स्वर (भजन संग्रह)
24. भजन वर्षा (भजन संग्रह)
25. मेरी छोटी सी है नाव (भजन संग्रह)
26. वात्सल्य
27. श्रीमद्भगवद्गीता
28. निरामय प्राकृतिक चिकित्सा

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी के बाल्यकाल और श्रीरामजन्मभूमि संघर्ष की रोचक गाथा

साध्वी ऋतम्भरा और श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन

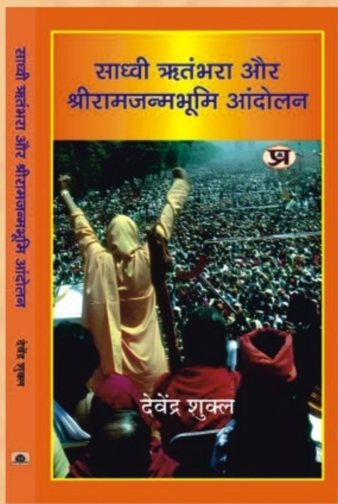

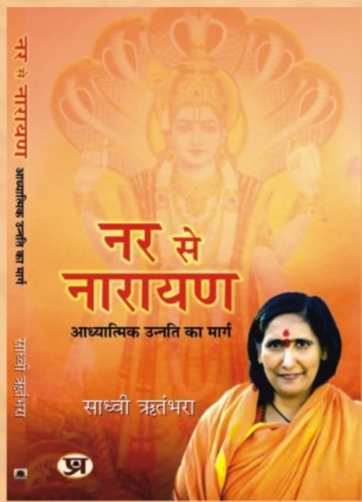

ये दोनों पुस्तकें www.prabhatbooks.com पर ऑनलाइन ऑर्डर करके घर बैठे मंगवाई जा सकती हैं

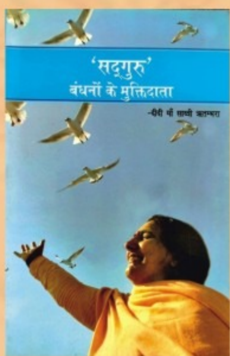

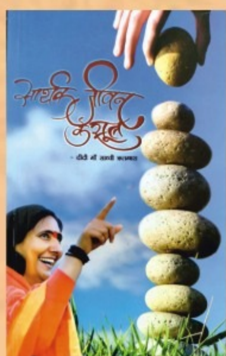

उपरोक्त साहित्य मंगवाने के लिए आप 'परमशक्ति पीठ' के निम्न पतों अथवा फोन नंबर्स पर सम्पर्क कर सकते हैं।

केन्द्रीय कार्यालय

परमशक्ति पीठ
लव-102, अग्रसेन आवास, 66 इन्द्रप्रस्थ विस्तार,
नई दिल्ली-110092
सम्पर्क फोन नं.-01122238751, 9958885858
ईमेल-info@vatsalyagram.org
वेबसाइट-www.vatsalyagram.org

शाखा कार्यालय

वात्सल्य ग्राम
मथुरा-वृन्दावन मार्ग,
पोस्ट-प्रेमनगर
वृन्दावन, जिला-मथुरा (उत्तरप्रदेश) पिन-281003
सम्पर्क फोन नंबर-9412777151

परमशक्ति पीठ के सेवा प्रकल्प
वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन

के विभिन्न प्रकल्पों हेतु
आपके आर्थिक सहयोग का स्वागत है

परमशक्ति पीठ में आपका सहयोग

आजीवन सहयोगी	1,00,000/-
संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
कार्पोरेट सहयोगी	11,00,000/-

वत्सल निधि में आपका सहयोग

शिक्षा निधि (वार्षिक)	6000/-
वत्सल निधि (एक सुविधा) वार्षिक	24,000/-
वत्सल निधि (शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन, होस्टल, अन्य) वार्षिक	1,20,000/-
बच्चों का एक समय का भोजन	21,000/-

वैशिष्ट्यम् स्कूल (दिव्यांग बच्चों हेतु) में आपका सहयोग

दिव्यांग बच्चों की समुचित देखभाल हेतु (वार्षिक)	1,50,000/-

चिकित्सा सेवाओं में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन के प्रेमवती गुप्ता नेत्र चिकित्सालय में आयोजित होने वाले निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन शिविरों हेतु (एक रोगी के ऑपरेशन हेतु)	3000/-
ग्रामीण क्षेत्रों में आयोजित होने वाले निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों हेतु (प्रति शिविर)	51,000/-

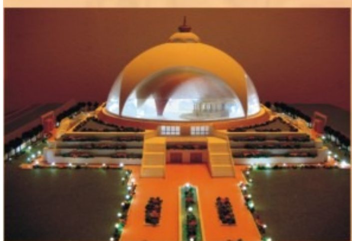

श्री सर्वमंगला पीठम् में आपका सहयोग

संस्थापक सहयोगी	5,00,000/-
एक शिला सहयोगी	1100/-

गौ सेवा में आपका सहयोग

वात्सल्य ग्राम, वृन्दावन की 'कामधेनु गौगृह गौशाला' हेतु

प्रति गौमाता सहयोग (मासिक)	3100/-
प्रति गौमाता सहयोग (वार्षिक)	36,000/-
गौवंश हेतु भूसा सहयोग (दैनिक)	11,000/-
गौवंश हेतु हरा चारा सहयोग (दैनिक)	5100/-
गौ दान राशि	50,000/-

Param Shakti Peeth

Vatsalya Gram, Vrundavan

Your Donetion is welcome for our various service projects

Your Donation for Param Shakti Peeth

Life Member	1,00,000/-
Founder Member	5,00,000/-
Corporate Member	11,00,000/-

Your Donation for Vatsal Nidhi

Shiksha Nidhi (Annual)	6000/-
Vatsal Nidhi (For one facility) Annual	24,000/-
Vatsal Nidhi (Education, Health, Meal, Hostel etc.) Annual	1,20,000/-
One time meal for children	21,000/-

Your Donation for Vaishishtyam school

For proper care of disabled children (Annual)	1,50,000/-

Your Donation for Medical Services

•For cataract operation camps to be organized at Premvati Gupta Eye Hospital, Vatsalya Village] Vrindavan (For operation of one pataint)	3000/-
•For free health camps to be organized in rural areas	51,000/-

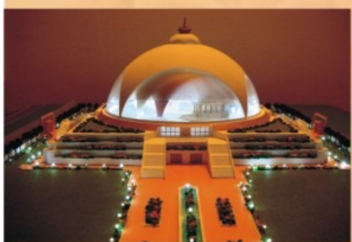

Your Donation for Shri Sarvmangla Peetham

Founder Member	5,00,000/-
One Brick donation	1100/-

Your Donation for Cow Shed

For Kamdhenu Gaugruh Gaushala of Vatsalya Gram

For One cow (Monthly)	3100/-
For One cow (Yearly)	36,000/-
Straw for cattle (Daily)	11,000/-
Green fodder cooperation for cattle (Daily)	5100/-
Cow donation fund	50,000/-

वात्सल्य ग्राम के साथ जुड़ने के लिए धन्यवाद

परमशक्ति पीठ के सेवाकार्यों में आप अपना सहयोग इस प्रकार दे सकते हैं :

बैंक खातों में सीधे जमा करने के लिए जानकारियाँ

बैंक का नाम : पंजाब नेशनल बैंक
खाता क्रमांक : 1518000101014134
आई.एफ.एस.सी. कोड : PUNB0151800

बैंक का नाम : स्टेट बैंक ऑफ इन्डिया
खाता क्रमांक : 10137296689
आई.एफ.एस.सी.कोड : SBIN0007085

दान के लिए ऑनलाइन लिंक :
https://www.vatsalyagram.org/donate

ऑनलाइन दान के लिए कृपया
इन क्यू.आर.कोड्स को स्केन करें

चेक अथवा डिमांड ड्राफ्ट द्वारा भी दान राशि परमशक्ति पीठ कार्यालय में भेजी जा सकती है।

प्रधान कार्यालय का पता :

परमशक्ति पीठ

लव–102, अग्रसेन आवास,
66, इन्द्रप्रस्थ विस्तार, पटपड़गंज, नई दिल्ली –110092
सम्पर्क सूत्र : 011-22238751, 9999971714, 9999971716
ईमेल : donorcare@vatsalyagram.org **वेबसाइट :** www.vatsalyagram.org

आपका सहयोग आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत कर मुक्त है।

योगदान प्रपत्र

जी हाँ, मैं वात्सल्य ग्राम के सेवा प्रकल्पों में अपना योगदान देना चाहता हूँ / चाहती हूँ। मेरा व्यक्तिगत विवरण इस प्रकार है।

श्री/श्रीमती/कुमारी ______________________

व्यवसाय ____________

पता ______________________

____________ पिनकोड ________

सम्पर्क फोन नंबर ____________

ईमेल आई.डी. ______________________

दान राशि (अंकों में) ________ (शब्दों में) ____________

परमानेंट अकाउंट नंबर (PAN) ____________

विनम्र श्रद्धांजलि

स्व.श्री अंकुर जी अग्रवाल

परमशक्ति पीठ के अनन्य सहयोगी एवं उपाध्यक्ष श्री जयभगवान अग्रवाल के भतीजे श्री अंकुर अग्रवाल का आकस्मिक देहावसान विगत 2 जुलाई को हो गया। पूज्या दीदी माँ जी एवं वात्सल्य परिवार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि एवं ईश्वर से प्रार्थना कि वे उन्हें अपने श्रीचरणों में लीन कर मोक्षपद प्रदान करें।

स्व.श्री मदन जी जिन्दल

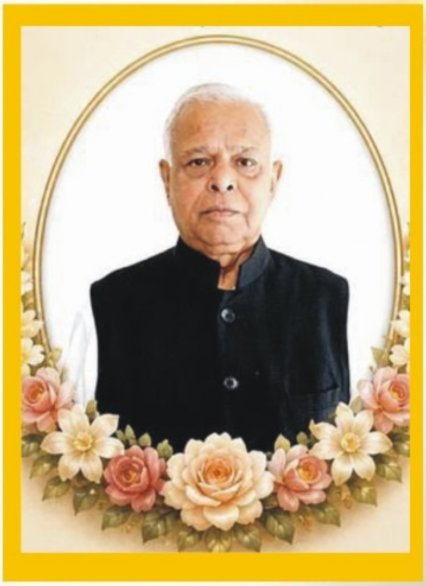

चालीस वर्षों तक पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी की धर्म, राष्ट्र एवं समाजसेवी यात्रा में निरन्तर सहभागी रहे श्री मदन जी जिंदल का देहावसान विगत 28 जुलाई को हो गया। उनकी विनम्रता और सहयोग परमशक्ति पीठ की अविस्मरणीय स्मृतियाँ हैं। पूज्या दीदी माँ जी एवं वात्सल्य परिवार की ओर से उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि एवं ईश्वर से उनके मोक्षपद की प्रार्थना।

Donation Form

Yes, I want to contribute for Vatsalya Gram. My personal details are

Mr./Mrs/Ms :..

Occupation :..

Address :..

....Pin Code.......................

Phone No. :............................ Mobile No. :.............................

email :..

Donation Amount (In digits) :.......................(In words)ण्ण्ण.........................

....Permanent A/c No...

Thanks for join hands with Vatsalya Gram

You can dontate your donation directly in following banks :

Bank name : Pujab National Bank	Bank name : State Bank Of India
A/c. No. : 1518000101014134	A/c. No. : 10137296689
IFSC Code : PUNB0151800	IFSC Code : SBIN0007085

Link for online donation : https://www.vatsalyagram.org/donate

Paytm Mobile Number of Donation : 88268 88001

वर्षा ऋतु और श्रावण मास ही महत्ता

(भाग-2)

-रमेश रंजन त्रिपाठी

गतांक का शेष...

भगवान राम को भी वर्षाकाल में सीताजी के अन्वेषण का कार्य स्थगित करना पड़ा था। इस अवधि में वे अपने अनुज लक्ष्मण के साथ प्रवर्षण गिरि पर रुक गये थे। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीराम चरित मानस' के 'किष्किन्धा कांड' में वर्षा ऋतु के प्रतीकों से व्यावहारिक और आध्यात्मिक ज्ञान की सुंदर सरिता बहाई है। तुलसी बाबा ने भगवान राम के मुख से कहलाया है कि हे लक्ष्मण! देखो मोरों के झुंड बादलों को देखकर ऐसे नाच रहे हैं, जैसे विरागी गृहस्थ विष्णु भक्त को देखकर हर्षित होते हैं। आकाश में बादल घुमड़ कर घोर गर्जना कर रहे हैं, प्रिया सीताजी के बिना मेरा मन डर रहा है। बिजली की चमक बादलों में ठहरती नहीं, जैसे दुष्ट की प्रीति स्थिर नहीं रहती। बादल धरती के समीप आकर बरस रहे हैं, जैसे विद्या पाकर विद्वान नम्र हो जाते हैं। बूँदों की चोट पर्वत ऐसे सहते हैं, जैसे दुष्टों के वचन संत सहते हैं। छोटी नदियाँ उफनकर किनारों को तुड़ाती हुई चलीं, जैसे दुष्ट थोड़े से धन से इतराकर मर्यादा त्याग देते हैं। पृथ्वी पर पड़ते ही पानी गंदला हो गया है, जैसे शुद्ध जीव से माया लिपट गई हो। जल इकट्ठा होकर तालाबों में भर रहा है, जैसे सद्गुण सज्जन पुरुष के पास चले आते हैं। नदी का नीर सागर में जाकर वैसे ही स्थिर हो जाता है, जैसे भगवान को पाकर जीव आवागमन से मुक्त होकर अचल हो जाता है। पृथ्वी घास से परिपूर्ण हो हरी हो गई है, जिससे रास्ते समझ में नहीं आते, इसी प्रकार पाखंड मत के प्रचार से सद्ग्रंथ लुप्त हो जाते हैं। चारों दिशाओं में मेंढकों की ध्वनि सुहावनी ऐसी लग रही है, मानों विद्यार्थियों के समुदाय वेद पढ़ रहे हों। अनेक वृक्ष नये पत्ते आने से हरे भरे होकर ऐसे सुशोभित हो रहे हैं, जैसे साधक का मन ज्ञान प्राप्त होने पर हो जाता है। मदार और जवास बिना पत्तों के हो गए हैं, जैसे उत्तम राज्य में दुष्टों का उद्यम जाता रहता है। धूल कहीं नहीं मिलती, जैसे क्रोध धर्म को समाप्त कर देता है। अन्न की हरी-भरी खेती से धरती ऐसी शोभायमान हो रही है, जैसे उपकारी पुरुष की संपत्ति। रात के अंधकार में जुगनू ऐसे चमक रहे हैं मानो दंभियों का समाज जुट आया हो। चतुर किसान खेतों को निरा रहे हैं जैसे विद्वान् लोग मोह, मद और मान का त्याग कर देते हैं। चक्रवाक पक्षी दिखाई नहीं दे रहे जैसे कलयुग को पाकर धर्म भाग जाते हैं। ऊसर में वर्षा होती है लेकिन वहाँ घास नहीं उगती, जैसे हरिभक्त के हृदय में काम नहीं उपजता। पृथ्वी अनेक जीवों से भरी सुशोभित हो रही है, जैसे सुराज्य पाकर प्रजा की वृद्धि होती है। जहाँ-तहाँ अनेक पथिक थककर ठहरे हुए हैं, जैसे ज्ञान उत्पन्न होने पर इंद्रियाँ शिथिल होकर विषयों की ओर जाना छोड़ देती हैं। कभी-कभी वायु बड़े वेग से चलने लगती है जिससे यहाँ-वहाँ बादल गायब हो जाते हैं, जैसे कपूत के पैदा होने से कुल के उत्तम धर्म नष्ट हो जाते हैं। कभी बादलों के कारण दिन में अंधेरा छा जाता है और कभी सूर्य प्रकट हो जाते हैं, जैसे कुसंग से ज्ञान नष्ट हो जाता है और सुसंग पाकर उत्पन्न हो जाता है।

सनातन धर्म में श्रावण मास को पवित्र और भगवान शिव का सबसे प्रिय महीना माना जाता है। भोलेनाथ की पूजा उपासना के लिए इसे श्रेष्ठ कहा गया है। मान्यताओं के अनुसार माता पार्वती ने भूतभावन भगवान शंकर को पति रूप में प्राप्त करने के लिए इसी महीने में घोर तप किया था। देव और दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन में निकले हलाहल विष से सभी पीड़ित हो गए। तब सृष्टि की रक्षा के लिए शंकर जी ने सावन के महीने में इस भयंकर जहर का पान कर अपने गले में धारण कर लिया। विष के कुप्रभाव से उन्हें भयानक जलन हुई और कंठ नीला पड़ गया। तब शिव जी का नीलकंठ नाम विख्यात हुआ। देवों, दानवों सभी ने महादेव की जलन को शांत करने के लिए पवित्र नदियों के जल से उनका अभिषेक किया। श्रावण मास में कांवड़ यात्रा इसीलिए की जाती है। पौराणिक श्लोक के अनुसार भगवान शिव कहते हैं- 'द्वादशस्वपि मासेषु श्रावणो मेऽतिवल्लभः। श्रवणार्हं यन्माहात्म्यं तेनासौ श्रावणो मतः॥ श्रवणर्क्षं पौर्णमास्यां ततोऽपि श्रावणः स्मृतः। यस्य श्रवणमात्रेण सिद्धिदः श्रावणोप्यतः॥' अर्थात् "बारह महीनों में मुझे श्रावण मास अत्यंत प्रिय है। इसका माहात्म्य श्रवण योग्य है, इसलिए यह श्रावण कहलाता है। इसकी पूर्णिमा में श्रवण नक्षत्र होता है। इसके श्रवण मात्र से ही सिद्धि मिलती है।" स्पष्ट है कि इस मास में भगवान की कथा के श्रवण का विशेष महत्त्व होने से इसे श्रावण नाम मिला।

वर्षा ऋतु पृथ्वी पर जीवन के लिए जितनी आवश्यक है उतनी ही मानवों की आध्यात्मिक उन्नति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अपने आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक कल्याण हेतु इस समय का भरपूर सदुपयोग करना चाहिए।

डिजिटल मीडिया

डिजिटिलाइजेशन वर्ल्ड के इस समय में 'डिजिटल मीडिया' रोजगार के क्षेत्र में एक आकर्षक और लाभकारी अवसर है। यदि आप भी समाचारों के क्षेत्र में रूचि रखते है और आपको देश विदेश में घट रही घटनाओं के बारे में अच्छी जानकारी है, तो आप भी इस क्षेत्र में अपना अच्छा करियर बना सकते है। इंटरनेट के युग में पत्रकारिता का भविष्य भी वेबसाइट पर आ गया है। अब लोग खबरों को ऑनलाइन पढ़ना या देखना ज्यादा पसंद करते है।

इस मीडिया की सहायता से आप चाहे किसी भी जगह पर हो। अगर आपके पास स्मार्ट फोन और इंटरनेट है तो आप तुरन्त ही पूरी दुनिया की खबरों के बारे में जान सकते है।

डिजिटल पत्रकारिता के लिए योग्यता

इस क्षेत्र में कॅरियर बनाने के लिए सबसे पहले आपको किसी भी स्ट्रीम से बारहवीं की परीक्षा पास करनी होगी उसके बाद आप पत्रकारिता से जुड़ा कोई भी डिग्री डिप्लोमा कोर्स कर सकते है। देश में पत्रकारिता की पढ़ाई करने के लिए बहुत संस्थान है ,लेकिन इन संस्थानों में अभी स्पेशल डिजिटल मीडिया का कोई कोर्स नहीं है। आमतौर पर पत्रकारिता से सभी शिक्षण संस्थान में न्यूज मीडिया, डिजिटल मीडिया, वेब पोर्टल, यूट्यूब, साइबर मीडिया इत्यादि विषयों को भी शामिल गया है।

डिजिटल पत्रकारिता संबंधी कुछ कोर्स

बैचलर डिग्री इन मास कम्यूनिकेशन

पी.जी.डिप्लोमा इन ब्रॉडकास्ट जर्नलिज्म

पी.जी.डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्यूनिकेशन

पी.जी.डिप्लोमा इन मास मीडिया

एम.ए. इन जर्नलिज्म

बी.एम.सी.एडव्हर्टाइजिंग एंड इवेंट मैनेजमेंट

जर्नलिज्म एंड पब्लिक रिलेशन्स

डिजिटल मीडिया के लिए कुछ महत्वपूर्ण स्किल

अगर आप वेब पोर्टल और डिजिटल मीडिया में अपना एक सफल कॅरियर बनाना चाहते हैं तो आपको पत्रकारिता के साथ-साथ कुछ तकनीकी ज्ञान भी होना आवश्यक है। एक अच्छे पत्रकार को अंग्रेजी और हिंदी दोनों भाषा की अच्छी समझ होनी चाहिए ताकि वो दूसरे देशों की खबरों को आसानी से समझ सकें।

डिजिटल मीडिया की नींव इंटरनेट पर टिकी होती है, इसलिए आपको इंटरनेट की अच्छी समझ होनी चाहिए। इंटरनेट पर किसी भी न्यूज या जानकारी को कैसे सर्च किया जाता है इसके बारे में भी आपको पता होना चाहिए। किसी भी खबर के बारे में ये कैसे पता लगाया जाता है कि ये खबर फेक है या नहीं, इसके बारे में भी आपको संपूर्ण ज्ञान होना चाहिए।

डिजिटल पत्रकारिता करने के लिए आपको सोशल मीडिया, ब्लॉगिंग, वीडियो एडिटिंग, फोटो शॉप, एचटीएमएल या सीएसएस का नॉलेज होना भी आवश्यक है।

डिजिटल पत्रकारिता आपकी आवाज का बड़ा महत्व है। इसलिए आपकी वॉइस और कम्युनिकेशन स्किल दोनों श्रेष्ठ होनी चाहिए, ताकि आप किसी समाचार को प्रभावी तरीके से दर्शकों तक पहुँचा सकें।

जॉब के अवसर

वर्तमान समय में चारों ओर सोशल मीडिया की धूम है। भविष्य में इसका क्षेत्र और अधिक बढ़ेगा। अब लोग समाचारों को स्मार्ट फोन में पढ़ना अधिक पसंद करते है, इसीलिए न्यूज चैनल से लेकर अखबार तक सब ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर आ चुके है। मीडिया हाउसेस को कंटेंट अपने जमीनी पत्रकारों से मिल जाता है। इसके लिए एक पत्रकार को अपने समाचार ऑनलाइन पत्रकारिता की भाषा में बदलकर अपने वेब पोर्टल पर अपलोड करने पड़ते हैं। ऐसे कामों के लिए आपको कॉपी एडिटर, सीनियर एडिटर, चीफ कॉपी एडिटर और संपादक के पद पर नौकरी आसानी से मिल सकती है। पत्रकारिता के क्षेत्र में आपको ग्राफिक डिजाइनिंग, वेब डेव्हलपमेंट, वीडियो एडिटर के रूप में बड़ी संख्या में जॉब के अवसर उपलब्ध है।

वेतन

डिजिटल मीडिया के क्षेत्र में यदि आप तीन से पाँच वर्ष का अनुभव प्राप्त कर लेते है तो आपकी सैलेरी पचास हजार रुपयों या उससे भी अधिक हो सकती है।

(ultimateguider.in से साभार)

हमारे तीर्थ

श्रीखण्ड महादेव

(कुल्लू, हिमाचल प्रदेश)

समुद्र तल से सत्रह हजार फीट की ऊँचाई पर स्थित है श्रीखण्ड महादेव मन्दिर। यह पवित्र स्थल हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में स्थित है। ये भारत के सबसे अधिक दुर्गम क्षेत्रों में बसे हुए तीर्थ स्थानों में से एक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार यहाँ भगवान शिवशंकर का निवास माना गया है। हिमाचल प्रदेश की मनोहारी और बर्फीली पर्वत श्रृंखलाओं के बीच यह तीर्थ दुनियाभर के हजारों हिन्दू तीर्थयात्रियों को प्रतिवर्ष श्रावण मास में अपनी पवित्रता की ओर आकर्षित करते हुए उन्हें मार्ग की अनेक कठिनाईयों के बाद भी यहाँ खींच लाता है। प्रतिवर्ष इस यात्रा का आयोजन कुल्लू के जिला प्रशासन एवं श्रीखंड महादेव यात्रा ट्रस्ट द्वारा किया जाता है। इस दुर्गम क्षेत्र में तीर्थयात्रियों को असामयिक बारिश और बर्फबारी का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहना चाहिए। तीर्थयात्रा के समय यहाँ भोजन, पानी और स्लीपिंग बैग मिल जाते हैं परन्तु फिर भी यात्रियों को यहाँ अपनी सभी दैनिक आवश्यकताओं के सामान सहित आना चाहिए। यात्रा के दौरान सुनिश्चित करें कि आपके साथ पानी की बोतलें, ग्लूकोज पाउच, गर्म कपड़े, बरसाती कपड़े, फ्लैशलाइट और सूखे मेवे हों। किसी बीमारी से ग्रस्त लोगों ने यह यात्रा कभी नहीं करनी चाहिए। कुल मिलाकर यह 35 कि.मी. का एक कठिन ट्रेक है जो कि अल्पाइन घास के मैदानों से होते हुए 72 फीट ऊँची उस चट्टान के शिखर तक पहुँचता है जिसे शिवलिंग कहा जाता है। यात्रा को पूरा होने में चार से पाँच दिन लगते हैं। जिला प्रशासन द्वारा तीर्थयात्रियों का यात्रा पूर्व पंजीकरण

लघुकथा

शूर्पणखा से राम बचाएँ

– रमेश रंजन त्रिपाठी

यदि किसी का पाला 'शूर्पणखा' से पड़ जाए, तो वह क्या करे? ऐसा होना आजकल बहुत अचरज की बात नहीं। जब त्रेता युग में 'शूर्पणखाएँ' स्वच्छन्द विचरण किया करती थीं तो, यह तो कलियुग है। गोस्वामी तुलसीदास जी ने 'श्रीरामचरितमानस' में सभी को 'शूर्पणखा' से बचने के लिए सुन्दर सीख दी है। जब रावण की बहन 'शूर्पणखा' श्रीराम पर डोरे डाल रही होती है, तब भगवान उसे उत्तर देने से पहले सीताजी की ओर देखते हैं। 'सीतहि चितइ कही प्रभु बाता'। यही मूल मंत्र है, 'शूर्पणखा' से सुरक्षित रहने का। 'शूर्पणखा' से सामना होने पर अपनी धर्मपत्नी का स्मरण करें। अर्द्धांगिनी के केवल नाम या चेहरे के विषय में ही न सोचें, अपितु उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का ध्यान करें और याद रखें कि वे वही हैं :

- जो आपके लिए अपने माता-पिता, भाई-बहन, रिश्ते-नाते, घर-बार सबकुछ पीछे छोड़ आई हैं।
- जिन्होंने अपना तन-मन, सर्वस्व आप पर न्यौछावर कर दिया है।
- जिन्होंने अपने जीवन की हर साँस आपके नाम कर दी है।
- जो हर दिन पलक-पाँवड़े बिछाकर आपकी प्रतीक्षा करती हैं।
- जो जीवन-पथ में आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलती हैं।
- जिन्होंने आपकी दुनिया को अपना संसार, आपकी खुशी और गम को अपना सुख-दुख बना लिया है।
- जिन्होंने अपनी महत्वाकांक्षाओं को आपकी महत्वाकांक्षाओं के साथ जोड़ लिया है।
- जो आपको भरा-पूरा परिवार दे रही हैं।
- जो आपके बच्चों की माँ हैं।
- जो आपके कुटुब की दशा और दिशा निर्धारित कर रही हैं।
- और, सबसे बड़ी बात, वे आप पर आँख मूँदकर विश्वास करती है।

यकीन मानिए, जब धर्मपत्नी का स्मरण इन विशेषताओं के साथ किया जाएगा तो कोई 'शूर्पणखा' किसी को परेशान नहीं कर सकेगी।

हम जो चुन लेते हैं वही हमारा भाग्य बन जाता है

-दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

राजलक्ष्मी संविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल, नालागढ़ के इस पावन प्रांगण में विराजमान श्री संजय भैयाजी, सुमन जी, हमारी प्रिंसिपल महोदया, श्री डी के शर्मा जी एवं यहाँ विराजमान सभी शिक्षक, शिक्षिकागण और प्यारे बच्चों। अपने शरीर को साधने की अपने मन को साधने की प्रैक्टिस। दो चीजें होती हैं बच्चों। एक होता है अनुशासन और एक होता है पछतावा। कौन सी दो चीजें होती हैं? अनुशासन और पछतावा। दोनों में कष्ट होता है। अनुशासन में रहना भी कष्टकारी होता है। और पछतावा तो कष्टकारी होता ही है। दोनों कष्टों में से अगर चुनना हो तो आप अच्छे से समझ सकते हैं कि क्या चुनना चाहिए। बताइए क्या चुनना चाहिए? अनुशासन। अनुशासन चुनना चाहिए। इसलिए चुनना चाहिए कि थोड़े समय के कष्ट से बचने के लिए हम जिंदगी भर के लिए पछतावे का कष्ट नहीं भोगना चाहते। इसलिए हमें क्या चुनना चाहिए? अनुशासन। जब भी आप जिंदगी के किसी मोड़ पर होंगे बच्चों तो उसका नाम होगा-दोराहा। वहाँ आपको एक राह चुननी है। आप जो चुन लेते हो वही आपका भाग्य बन जाता है। आप ये नहीं कह सकते कि हमने भाग्यवश ये चुन लिया। आपके चुनने के बाद आपका भाग्य बनता है। दूसरी बात निरंतरता। आपकी प्रैक्टिस में जब निरंतरता होती है भले ही वो थोड़ी देर के लिए हो वो आपकी आदत बन जाती है। और जो आपकी आदत बन जाती है वो आपका चरित्र बन जाती है। और जो आपका चरित्र बन जाता है वो आपका भाग्य बन जाता है। इस बात को हमेशा याद रखना। अगर तुम भाग्यवादी नजरिए के साथ बात करोगे कि ग्रह नक्षत्र तुमको वहां पहुंचा देंगे जहां तुम्हें पहुंचना होगा तो तुम बहुत बड़े भूल में हो। कर्म भाग्य का पहला मंत्र है और कर्म में निरंतरता होनी चाहिए। यदि आपने इन बातों को ध्यान में रख लिया तो फिर निश्चित मानिए कि आपका विद्यार्थी जीवन और उसके बाद व्यावसायिक जीवन सफल होने के साथ ही आप परिवार, समाज और राष्ट्र के लिए भी हितकारी सिद्ध होंगे।

राजलक्ष्मी संविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल, ग्राम-वारियां नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश) में छात्रों एवं विद्यालय परिवार के साथ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

अपने नालागढ़ (हिमाचल प्रदेश) प्रवास के दौरान राजलक्ष्मी संविद गुरुकुलम् सैनिक स्कूल एवं
नगर के प्रबुद्धजनों के साथ संवाद करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

स्वामी सत्यश्रेय गिरि महामंडलेश्वर पट्टाभिषेक समारोह

हरिद्वार, उत्तराखण्ड

पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के शिष्य स्वामी सत्यश्रेय गिरि का महामंडलेश्वरी पट्टाभिषेक विगत 12 जुलाई को हरिद्वार में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्या दीदी माँ जी, अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष पूज्य महन्त श्री रवीन्द्र पुरी जी महाराज, निर्वाणपीठाधीश्वर पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री विशोकानन्द भारती जी महाराज, आनन्द अखाड़ा पीठाधीश्वर पूज्य आचार्य महामण्डलेश्वर स्वामी श्री बालकानन्द गिरि जी महाराज, पूज्य आचार्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री कैलाशानन्द गिरि जी महाराज, पूज्य महामंडलेश्वर स्वामी श्री चित्प्रकाशानन्द गिरि जी महाराज, पूर्व केन्द्रीय मंत्री पूज्या साध्वी निरंजन ज्योति जी एवं पूज्या साध्वी साक्षी चेतना जी सहित अनेक सन्तों के पावन सानिध्य में स्वामी सत्यश्रेय गिरि जी को विभिन्न धार्मिक अनुष्ठान के बीच महामंडलेश्वरी पट्टाभिषेक पद से अभिषिक्त किया गया।

पद-प्रतिष्ठाओं का नशा सिर पर नहीं चढ़ना चाहिए

– दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा

किसी भी व्यक्ति के जीवन का सबसे बड़ा दायित्व होता है कि वो सबको जोड़कर रखे। सबकी मति, गति एक दिशा में जब होती है तो सबका और चारों तरफ उत्कर्ष ही उत्कर्ष होता है।

आज अखिल भारतीय अखाड़ा परिषद के पूज्य अध्यक्ष महोदय एवं सभी पूज्य सन्तवृन्दों के पावन सानिध्य में मेरे जिन शिष्य स्वामी सत्यश्रेय गिरि का महामंडलेश्वरी पट्टाभिषेक हो रहा है जब वो मात्र छह वर्ष आयु के थे, तब ये बदनावर से पूज्य स्वामी त्यागनंद जी महाराज के साथ आ गये थे। फिर मेरे गुरु भाईयों, चाहे वे स्वामी जगतप्रकाश जी त्यागी हों अथवा स्वामी चित्प्रकाशानंद जी महाराज, के पावन सानिध्य में इन्होंने आध्यात्मिक यात्रा के पथ पर अपने कदम रखे। ये जो बालक है ना अध्यक्ष जी, ये नर्मदा की तेज धार में पड़ा वो पत्थर था, जिसको संतों ने अपनी ज्ञानधारा के ऐसे थपेड़े लगाए कि वो कंकर से शंकर होने की और बढ़ चला। आश्रमों में झाड़ू देने, बर्तन मांजने, रसोई में आटा गूंथने से लेकर सबका स्वागत-सत्कार करने से लेकर इसने अपने सभी दायित्वों को पूरा करने का निष्ठापूर्वक प्रयत्न किया। ये जो आज इनको सबका नेह मिल रहा है, तो सब कह रहे हैं कि ये दीदी माँ की वजह से है लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। इनका अपना सद्व्यवहार है जो सब इनके प्रेम में खींचे चले आए हैं और इनको आशीर्वाद प्रदान कर रहे हैं।

आज आप महामंडलेश्वर पद से अभिषिक्त होने जा रहे हैं तो मैं आपको एक बात कहना चाहती हूँ कि पद-प्रतिष्ठाओं का नशा होता है। मैंने बड़े-बड़ों को देखा है, उनका दिमाग खराब हो जाता है। यदि आप पद पाकर, प्रतिष्ठा पाकर भी हम अपने अभिमान के अंकुर को प्रस्फुटित ना होने दें, ये ईश्वर की कृपा के बिना हो नहीं सकता। आपकी जिस सरलता ने सबको जोड़ा है, वो पद के अभिमान में खोनी नहीं चाहिए।

सब पुतले हैं हाड़ मांस के अंतर्निहित भाव होता है
कुछ उज्जवल आलोकित रवि से कुछ में कुछ दुराव होता है
कोई दस्तावेज नहीं है इसको परिभाषित करने में
संत व्यक्ति या वस्त्र नहीं है वो तो बस स्वभाव होता है।

स्वभाव में साधुता, विनम्रता और सहजता होनी चाहिए। अब आप अखाड़े के अनुशासन में हैं। अब दीदी माँ के वात्सल्य में नहीं है। अब आप अखाड़ा परिषद के माननीय अध्यक्ष जी के अनुशासन में हैं। जरा भी तीन पाँच करेंगे तो उनके द्वारा कान खींच लिए जाएंगे। अब आप पावन पवित्र सनातनी परम्परा के संवाहक बन गए हैं। मैं आशीर्वाद देती हूँ कि अलकनंदा भगवती का आपको प्रसाद मिले। भगवान कार्तिकेय स्वामी की परम्परा को आपने स्वीकार किया है।

ध्यान रखियेगा कि जब चार लोग बदतमीजियाँ करते हैं, भ्रष्टाचरण के रास्ते पर चलते हैं, भगवान के धन की चोरी करते हैं तो हमें पूरे विश्व में शर्मिंदा होना पड़ता है, लज्जा से सिर झुकाना पड़ता है। अभी संतों ने जो चिंता व्यक्त की है वो यही है कि हम प्रामाणिक बनें। स्वतंत्रता, उच्छृंखलता ना बने और अनुशासित होने को शासित होना ना माना जाए, तो व्यक्ति का कभी पतन नहीं हो सकता। संतों ने आशीर्वाद दिया तो बदनावर का पूरा समाज आपके ऊपर प्यार लुटाने आया है। आपके गुरु भाई आपके गुरु बहनें, सब आपकी व्यवस्था में लगे हैं। ये इसीलिए हो रहा है कि आप सबको प्यार करते हो। आपको मैं बहुत-बहुत आशा आशीर्वाद प्रदान करते हुए आपके उज्जवल आध्यात्मिक जीवन की मंगलकामना करती हूँ।

संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल छात्र परिषद अलंकरण समारोह

वृन्दावन (उ.प्र.)

वात्सल्य ग्राम स्थित संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल में विगत 27 जुलाई को छात्र परिषद अलंकरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी के पावन कर-कमलों से माता सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। पूज्या दीदी माँ जी ने परिषद की नवनिर्वाचित सदस्य छात्राओं को बैज लगाकर दायित्व ध्वज सौंपा।

विद्यालय की हेड गर्ल बनीं साक्षी वर्मा (कक्षा 12वीं-विज्ञान वर्ग)। परिषद की अन्य पदाधिकारियों में अनन्या वत्स (वॉइस हेड गर्ल-कक्षा 11वीं), दृष्णा अनिल (स्पोर्ट्स केप्टन), परी गोयल (वॉइस स्पोर्ट्स कैप्टन), गार्गी शर्मा (कल्चरल कैप्टन), दिव्यंका सिंह (वॉइस कल्चरल कैप्टन), संस्कृति सिवाच (तेजस्विनी हाउस कैप्टन), यश्वी अग्रवाल (वॉइस हाउस कैप्टन), वामिका सिंह (ओजस्विनी हाउस कैप्टन), तन्वी पाण्डेय (तपस्विनी हाउस कैप्टन), वसुंधरा चंदेल (कैप्टन-डिसिप्लीन), वंदना चौधरी (वाइस कैप्टन-डिसिप्लीन), वामिका कश्यप (हेड गर्ल-प्राइमरी), प्राची प्रज्ञा (कैप्टन-सीनियर कैडेट), शाही सिंह परिहार (कैप्टन कॉर्पोरल), अनन्या (कैप्टन-क्वार्टर मास्टर), पालयम् व लोपामुद्रा अनुशासन समिति में दिव्याशा गंगवार, राधिका, स्नेहा विश्वास, उन्नति गुप्ता, वंशिका चौहान, वेदिका शर्मा, आभा, भान्वी बघेल, समृद्धि सिंह, खुशी कुमारी, प्रियांशी कामताक, समीक्षा मिश्रा, अमूल्या तिवारी, आर्ची दलाल तथा आन्या अलिवा दास को विभिन्न दायित्व सौंपकर उत्तरदायित्वों की शपथ ग्रहण करवाई गई।

इस अवसर पर समस्त विद्यालय परिवार को अपने आशीवर्चन प्रदान करते हुए पूज्या दीदी माँ जी ने कहा कि विद्यार्थियों ने स्वयं अनुशासित होकर अपने मन को संयम व अंकुश में रखते हुए अपने लक्ष्य को पूरा करना चाहिए। अपने भीतर के नेतृत्व गुण को जागृत करने का प्रयत्न सदैव करना चाहिए। ध्यान रहे कि सदैव उत्साह स्वरूप प्रयत्न करते हुए अपने शिक्षकों का आदेश स्वीकार कर विद्यालय में अनुशासनात्मक वातावरण बनाए रखना चाहिए। आज के विद्यार्थी आने वाले समय के राष्ट्र निर्माता होते हैं इसलिए आप सभी भारत की ऋषि परंपरा के संवाहक बनकर भारत के मुकुट समान चमकें। भाषा की विनम्रता को बनाए रखें। ध्रुव तथा लव और कुश जैसे आत्मविश्वासी बालक बनें।

संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल के चेयरमैन श्री संजय भैया सहित सुश्री सुमनलता जी, श्री अशोक सरीन, श्रीमती पूजा सिंह, आई.जी. एच के शर्मा तथा स्वामी श्री सत्यशील जी ने अपनी उपस्थिति से आयोजन को प्रतिष्ठा प्रदान की। कार्यक्रम की समापन बेला में स्कूल की हेड गर्ल साक्षी वर्मा ने अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए उन्हें धन्यवाद प्रेषित किया। मंच संचालन प्रीति सैनी ने किया।

संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल में छात्र परिषद अलंकरण समारोह को संबोधित करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी।

संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल, वृन्दावन में छात्र परिषद अलंकरण समारोह के शानदार दृश्य

॥ जय जगन्नाथ ॥

परमशक्ति पीठ द्वारा श्री जगन्नाथ धाम, पुरी में आयोजित

श्रीमद् भागवत कथा महोत्सव

कथा व्यास

परमपूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी

1 से 7 सितंबर 2026

समय

प्रतिदिन प्रातः 9 बजे से मध्यान्ह 12 बजे तक

कथा स्थल

होटल सेवन हिल्स, पुरी, ओड़िशा

रजिस्ट्रेशन शुल्क - प्रति व्यक्ति 41000.00 रुपये
डबल बेड कक्ष में एक अतिरिक्त बेड लेने पर शुल्क 35000.00 रुपये
डबल बेड कक्ष में दो अतिरिक्त बेड लेने पर शुल्क 30000.00 रुपये
कुल सदस्य संख्या - 400

*.PARAM SHAKTI PEETH
Scan and Pay
UPI ID : PARAMSHAKTIPEETH.eazypay@icici

ACCOUNT DETAILS
Account Name : Param Shakti Peeth
Account No. : 033001001453
IFSC Code : ICIC0000330
Branch : Anand Vihar, Delhi

रजिस्ट्रेशन शुल्क जमा करने के पश्चात पुष्टि हेतु 99585 80130, 8826888003 पर फोन कॉल अथवा व्हाट्स एप से सम्पर्क करें। आप ईमेल info@vatsalyagram.org द्वारा सूचना दे सकते हैं

सम्पर्क–82620 84090, 99585 80130
011 22238751, 99999 71714, 94122 77289

उपलब्ध सुविधाएँ :

- इस शुल्क में सात दिनों तक होटल सेवन हिल्स में आपका निवास और भोजन व्यवस्था सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त इसी शुल्क में प्रतिदिन श्रद्धालुगणों को स्थानीय मंदिरों एवं दर्शनीय स्थलों के भ्रमण की व्यवस्था भी रहेगी।
- होटल के एक कक्ष में दो श्रद्धालु रहेंगे।
- अपने गृह नगर से जगन्नाथ पुरी तक पहुँचने का यात्रा व्यय श्रद्धालुगण स्वयं वहन करेंगे।
- 31 अगस्त 2026 को जगन्नाथ पुरी के निकटतम भुवनेश्वर एयरपोर्ट से कथा स्थल तक पहुँचने और कथा समापन के पश्चात् 8 सितम्बर 2026 को पुनः एयरपोर्ट तक पहुँचने हेतु वाहनों की व्यवस्था श्रद्धालुगणों की पूर्व सूचना पर परमशक्ति पीठ की ओर से उपलब्ध रहेगी।
- यदि आपको विमान यात्रा टिकिट बुकिंग करने में कोई कठिनाई हो तो इसके लिए आप श्री अजय अग्रवाल से मोबाइल नंबर 95553 50061 पर संपर्क कर सकते हैं।

विगत दिनों पुणे, महाराष्ट्र स्थित 'डिफेंस रिसर्च एंड डेव्हलपमेंट आर्गेनाइजेशन' (डी.आर.डी.ओ.) का अवलोकन कर उसकी कार्यप्रणाली को समझने वाली संविद गुरुकुलम् गर्ल्स सैनिक स्कूल की प्रतिभाशाली छात्राओं ने से चर्चा करते हुए पूज्या दीदी माँ साध्वी ऋतम्भरा जी। दूसरे चित्र में छात्राओं के साथ पूज्या दीदी माँ जी एवं स्कूल प्रबन्धन के पदाधिकारीगण

टेलीविज़न पर

परम पूज्य सद्गुरुदेव युगपुरुष
स्वामी परमानन्द जी महाराज की
परम वाणी

दिशा TV
प्रतिदिन
रात्रि 9:30 बजे

Vedic
सोमवार, बुधवार एवं गुरुवार प्रातः 9:30 बजे

परम पूज्य वात्सल्यमूर्ति
दीदी माँ साध्वी ऋतम्भराजी की
वात्सल्य वाणी

संस्कार THE CHANNEL OF INDIA हमारी संस्कृति हमारी विरासत
प्रतिदिन
सायं 7:20 बजे

आस्था
प्रतिदिन
प्रातः 8:00 बजे

सत्संग
प्रतिदिन
रात्रि 10:00 बजे

Postal Regd. No. DL(E)20/5231/2025-27
DELMUL/2006/16716
Postal Date : 9th & 10th of Every month

An ISO 9001: 2000 Certified School

Samvid Gurukulam Girls Sainik SCHOOL

CBSE affiliated (# 2131180)
Co-Education up to Class Vth; Residential and Day School for Girls
Play Group - Grade XII (Science, Commerce, Humanities)

TECHNOLOGY ENABLED SCHOOL
Powered By : Extramarks

Approved as
Girls Sainik School
by 'Sainik School Society'
Ministry of Defense

We bring out the 'winner in your child'

- State of the art infrastructure
- Low teacher student ratio
- Total Personality Development
- Wi-Fi Campus
- Counseling Cell
- Center of performing arts
- Safe guarding Indian culture as part of world heritage
- Science, Computer & Mathematics Lab
- Regular Excursions
- Centrally Air cooled Hostel for girls.
- SANSKARAM CLASSES: Learning life skills through Value Education
- NANHI DUNIYA: Introduction of children to nature
- SPORTS ACADEMY: Horse Riding, Skating Football, Hockey, Basket Ball, Lawn Tennis, Table Tennis, Judo-Karate, 400M Track
- MUSIC: Vocal & Instrumental
- DANCE: Bharatnatyam, Kathak, Contemporary
- Transport facility available

Vatsalya Gram, Mathura - Vrindavan Marg, P.O. - Prem Nagar,
Vrindavan - 281003 (U.P.) Mobile No. 94127 77152 & 94127 77154
Website : www.samvidgurukulam.org
Like us at : www.facebook.com / samvid4u
email : principal@samvidgurukulam.org